संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ फरवरी २०११
वर्ष : २० अंक : ८
(निरंतर अंक : २१८)

पूज्य संत
श्री आसारामजी बापू

'स्नेह दिवस' मनायेंगे

भारत वर्ष में जन्मे हैं हम, निज संस्कृति अपनायेंगे ।
'वेलेन्टाईन डे' नहीं हम, 'स्नेह दिवस' मनायेंगे ॥
पूजन करेंगे मात-पिता का, आशीष उन्हींका पायेंगे ।
हम ऋषियों के लाल हैं, आदर्श उन्हींको बनायेंगे ॥
निज पावन ऋषि परम्परा को, सारे जग में फैलायेंगे ।
होंगे जहाँ भी आज दिवस, हम गुरु-संदेश अपनायेंगे ॥
माला, फूल से थाल सजाकर, सुंदर दीप जलायेंगे ।
सुंदर आसन एक बिछाकर, मात-पिता को बैठायेंगे ॥
तिलक करेंगे मस्तक पर, फिर चरणों में झुक जायेंगे ।
संकल्प लेंगे उनके सामने, गलती नहीं दोहरायेंगे ॥
जो भी होंगी भूलें हमारी, कभी न उनसे छुपायेंगे ।
नेक राह पर हम चलेंगे, बदी को दूर भगायेंगे ॥
दुर्गुण, दोषों का त्याग करेंगे, जीवन दिव्य बनायेंगे ।
सोचो ऐसा करने से हम, कितना आनंद पायेंगे ॥
मात-पिता के होंगे दुलारे, प्यार सभीका पायेंगे ।
सच्चाई की राह चलेंगे, नेक इंसान कहलायेंगे ॥
निज महान संस्कृति का हम, गौरव खूब बढ़ायेंगे ।
संत, शास्त्र, सत्संग को हम, कभी नहीं भुलायेंगे ॥
जो कुछ सीखा इनसे हमने, 'जीवन' में अपनायेंगे ।
जन्म लिया है इस धरती पर, हम इसका कर्ज चुकायेंगे ।
संकल्प है प्यारे बापू का, भारत को विश्वगुरु बनायेंगे ॥

- जीवन, अहमदाबाद
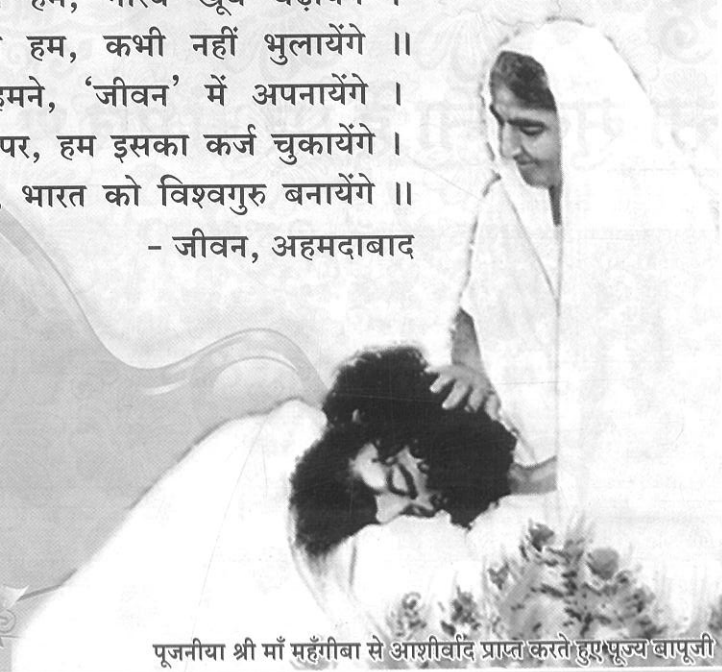
पूजनीया श्री माँ महँगीबा से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए पूज्य बापूजी

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २० | अंक : ८
भाषा : हिन्दी | (निरंतर अंक : २१८)
१ फरवरी २०११ | मूल्य : रु. ६-००
माघ-फाल्गुन | वि.सं. २०६७

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९ (गुजरात).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक	: रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक	: रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक	: रु. २२५/-
(४) आजीवन	: रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में
(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक	: रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक	: रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक	: रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक	: US $ 20
(२) द्विवार्षिक	: US $ 40
(३) पंचवार्षिक	: US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

Opinions expressed in this magazine are not necessarily of the editorial board.
Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

विभिन्न टी.वी. चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	care WORLD	सत्संग टी.वी.	JUS one (अमेरिका)
रोज सुबह ५-३० व ७-३० बजे तथा रात्रि १०-०० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि १०-०० बजे	सोम से शुक्र शाम ७ बजे शनि-रवि शाम ७-३० बजे

✲ A2Z चैनल रिलायंस के 'बिग टीवी' पर भी उपलब्ध है। चैनल नं. 425
✲ care WORLD चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 770
✲ JUS one चैनल 'डिश टीवी' (अमेरिका) पर उपलब्ध है। चैनल नं. 581

परमात्मा का स्वभाव, स्वरूप और गुण क्या ?

– पूज्य बापूजी

आप परमात्मा का स्वभाव जान लो, स्वरूप जान लो और गुण जान लो । बाप-रे-बाप ! क्या मंगल समाचार है ! क्या ऊँची खबर है ! भगवान के गुणों का ज्ञान उपासना में काम आता है। भगवान के स्वभाव का ज्ञान शरणागति में काम आता है और भगवान के स्वरूप का ज्ञान भगवान से एकाकार होने में काम आता है। भगवान का वास्तविक स्वरूप क्या है यह जानोगे तो फिर आप भगवान से अलग नहीं रह पाओगे । भगवान का स्वभाव जानोगे तो आप उनकी शरण हुए बिना रुक नहीं सकते । भगवान के गुणों का ध्यान सुन लोगे, जान लोगे तो आप उनकी उपासना किये बिना नहीं रह सकते। अद्भुत हैं भगवान के गुण ! अद्भुत है भगवान का सामर्थ्य ! अद्भुत है भगवान की दूरदर्शिता और अद्भुत है भगवान की सुव्यवस्था ! छोटी मति से भले कभी-कभार कहें कि 'यह अन्याय हो गया, यह जुल्म हो गया, यह अच्छा नहीं हुआ' लेकिन जब भगवान की वह लीला और संविधान देखते हैं तो कह उठते हैं कि 'वाह-रे-वाह प्रभु ! क्या आपकी व्यवस्था है ! करुणा-वरुणा के साथ सबकी उन्नति करने का क्या आपका स्वभाव है !'

अजब राज है मोहब्बत के फसाने का।
जिसको जितना आता है,
उतना ही गाये चला जाता है ॥

एक आसाराम के शरीर में हजार-हजार जिह्वाएँ हों और ऐसे हजार-हजार शरीर मिल जायें, फिर भी आपके गुणों का, स्वभाव का, सामर्थ्य का वर्णन नहीं कर पायेंगे, नहीं कर सकते। जितना थोड़ा कुछ करते हैं उसीमें आपकी करुणा-वरुणा और रस तथा प्रकाश पाकर तृप्त हो जाते हैं। प्रभुजी ! प्यारेजी ! मेरेजी !....

भगवान कैसे ? आप जैसा चाहते हो वैसे ! भगवान की अपनी कोई जाति नहीं। भगवान का अपना कोई रूप-रंग नहीं। जिस रूप-रंग से आप चाहते हो, उसी रूप-रंग से वे समर्थ प्रकट हो जाते हैं। **अहं भक्तपराधीनः**। 'ॐ... ॐ... शांति !' बोलोगे तो शांति भर देंगे। 'आनंद... ! आनंद... !' तो आनंद उभार देंगे। 'अच्युत, गोविंद...' – इन नामों से पावन होते जाओगे। भगवान का स्वरूप क्या है ? भगवान के स्वरूप का वर्णन तो भगवान भी नहीं कर सकते तो हम-तुम क्या कर सकते हैं ! फिर भी थोड़ा-थोड़ा वर्णन करके काम बना लेते हैं हम।

भगवान का स्वरूप क्या है ? बोले : 'सोने का स्वरूप क्या है ?' सोने का कंगन ले आये, अँगूठी ले आये, हार ले आये, चूड़ियाँ ले आये। ये तो गहने हैं लेकिन इनकी मूल धातु सोना है। मूल धातु को समझ लो। गहने अनेक प्रकार के लेकिन मूल धातु एक ही। सत्स्वरूप, चेतनस्वरूप, आनंदस्वरूप चिद्घन सारे ब्रह्माण्डों में ठसाठस भरपूर – यह भगवान का स्वरूप है। भगवान का स्वभाव क्या है ? भगवान का स्वभाव है जो जिस रूप में पुकारे, जिस रूप में प्रेम करे, जिस रूप में चाहे उस रूप में उसके आगे प्रकट हो जाते हैं। भक्तवत्सलता भगवान का स्वभाव है। भक्तपराधीनता भगवान का स्वभाव है। अपने को बेचकर भी भक्त का काम करते हैं। अपने को

बँधवाकर भी भक्त को खुशी देते हैं। घोड़ागाड़ी चलाकर भी भक्त का काम होता है तो कर लेंगे। भक्त के घोड़ों की मालिश करनी होती है तो भी कर लेंगे। भक्तानी के जूठे बेर खाकर भी उसका मंगल होता है तो वे कर लेते हैं और ताड़का-वध करने से भी गुरु की सेवा हो जाती है तो वह भी कर लेंगे। 'हाय सीते ! सीते ! कहाँ गयी ? हाय सीते !...' - ऐसा करने से भी भक्तों की सूझबूझ बढ़ती है तो वे कर लेंगे।

यह किस चीज का पेड़ है ? मोसम्बी मिली तो बोले : 'मोसम्बी का पेड़ है।' आम मिले तो बोले : 'आम का पेड़ है।' पपीता मिला, नारियल मिला, जो फल मिला, बोले : 'इसीका पेड़ है।' लेकिन कोई ऐसा पेड़ कि जो जैसा फल माँगे वैसा फल उसे दे तो उसको क्या बोलोगे ? आम का बोलोगे, चीकू का बोलोगे, नारियल का बोलोगे, पपीते का बोलोगे कि अनार का बोलोगे ? उसको कल्पतरु बोलोगे। जो जैसी कल्पना करे उसी प्रकार का फल दे दे, उसे 'कल्पतरु' कहते हैं। तो भगवान कैसे हैं ? भगवान का स्वभाव क्या है ? भक्तवत्सल, कल्पतरु ! भगवान का स्वरूप क्या है ? सर्वेश्वर, सत्-चित्-आनंद, चिद्घन, सर्व ब्रह्माण्डों में ओतप्रोत-भरपूर ! जैसे सूत के चित्र में सूत की ही माला, सूत के ही दाने और चप्पल भी सूत की, पैर भी सूत के, वक्षस्थल भी सूत का तो जो कपड़े पहने हैं वे भी सूत के। शक्कर के खिलौनों में लाट साहब भी शक्कर का तो चपरासी भी शक्कर का। हाथी भी शक्कर का तो उस पर बैठा राजा भी शक्कर का। अब कहीं राजा दिखता है, कहीं लाट साहब दिखता है, कहीं चपरासी दिखता है तो कहीं प्रजा दिखती है लेकिन है शक्कर-ही-शक्कर। ऐसे ही भगवान का स्वरूप क्या है ? बोले : सत्- चित्- आनंद, चिद्घन, विभु, व्याप्त, सर्वत्र। भगवान का स्वभाव क्या है ? भक्तवत्सल। भक्त जिस रूप में, जिस भाव में उन्हें पुकारे वे प्रकट हो जाते हैं क्योंकि वे कल्पतरु हैं।

भगवान का गुण क्या है ? भगवान का गुण है : सुहृदता। मित्र तो बदले में कुछ पाने के भाव से हमारी मदद करेगा लेकिन भगवान कोई बदले की भावना से नहीं करते। प्राणिमात्र के परम सुहृद परमात्मा हैं। सुहृदता भगवान का गुण है। **सुहृदं सर्वभूतानाम्।** 'मैं प्राणिमात्र का सुहृद हूँ।' **ज्ञात्वा मां शांतिमृच्छति।** 'ऐसा मुझे जाननेवाला शांति को पाता है।' और शांति से बड़ा कोई सुख नहीं। **अशांतस्य कुतः सुखम्।** अशांत को सुख कहाँ ! और शांतात्मा को दुःख कहाँ ! आप सुबह उठिये और मन-ही-मन कहिये : 'भगवान ! आपका स्वरूप है सर्वव्यापक। सारी इन्द्रियाँ, सारे मन आप ही में आराम पाते हैं और उनको आप ही पालते हो, आप गोपाल भी हो। सारे प्राणियों की इन्द्रियाँ और मन आप ही से सत्ता पाकर विचरण करते हैं। आप गोविंद भी हो। आप राधारमण हो। 'राधा'... उलटा दो तो 'धारा'। चित्त का फुरना, चित्त की कलना जिसकी सत्ता से रमण करती है, वह आप राधारमण भी हो। आप अच्युत भी हो। सारे पद च्युत हो जाते हैं, सारे शरीर च्युत हो जाते हैं, स्वर्गलोक भी च्युत हो जाता है, ब्रह्मलोक भी च्युत हो जाता है, आकृतियाँ च्युत हो जाती हैं फिर भी हे प्रभु ! आप च्युत नहीं होते हो - आप अच्युत हो। आप केशव हो। 'क' माने ब्रह्मा का आत्मा आप ही हो। 'श' माने शिव का आत्मा भी आप हो। 'व' माने विष्णु का आत्मा भी आप हो और मेरा आत्मा भी आप हो। आपका स्वरूप तो थोड़ा-थोड़ा जानते हैं। प्रभु ! आप ऐसे हो और मेरे अपने अंतर्यामी होकर बैठे हो। आपका स्वभाव भक्तवत्सल है। जिसने जिस भाव से पुकारा... **भावग्राही जनार्दनः।** 'भाव को ही ग्रहण करनेवाले हो जनार्दन !' 'ॐ... ॐ... आनंद !' बोलेंगे तो आनंद दोगे। 'ॐ... ॐ... शांति !' तो शांति दोगे। 'ॐ... ॐ... दुश्मन का ऐसा हो, वैसा हो...' खुराफात बोलेंगे तो खुराफात दोगे और प्रेमस्वरूप बोलेंगे तो प्रेम दोगे। आपका

स्वभाव है भक्तवत्सल, कल्पतरु।' और महिलाएँ हैं तो प्रभु को कामधेनु मान लो। कल्पतरु के आगे जो कल्पना करो वह पूरी होती है। कामधेनु के आगे जो कामना करो वह देती है। 'आप कल्पतरु भी हो, कामधेनु भी हो, गुरुरूप भी हो, साधकरूप भी हो, सुहृदरूप भी हो, मित्ररूप भी हो - सभी रूपों में आप हो और सारे रूपों के बाद भी आप ही रह जाते हो, अच्युत हो। ॐ आनंद ! ॐ अच्युत ! ॐ गोविंद !' - इस प्रकार का सुबह आरम्भिक मधुमय चिंतन करो तो आपका सारा दिन मधुमय होने लगेगा।

'आपका गुण क्या है ? मित्र देकर उत्साह देते हो और शत्रु, विरोधी देकर अहंकार को मिटाते हो, सावधानी बढ़ाते हो, आसक्ति मिटाते हो। प्राणिमात्र के सुहृद हो। हो न !' - एक हाथ अपना और एक ठाकुरजी का मानकर अपने ही दायें हाथ से बायाँ हाथ मिलाओ। भगवान की सुहृदता, भगवान की भक्तवत्सलता और भगवान का विभु स्वभाव याद करो तो फिर देर-सवेर पता चलेगा कि भगवान आपके आत्मा होकर बैठे हैं।

जो ठाकुरु सद सदा हजूरे।
ता कउ अंधा जानत दूरे ॥

'आप दूर नहीं, दुर्लभ नहीं। **जय जगदीश हरे**... जगत के ईश आप। **भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करें।** आपके स्वभाव का, आपके स्वरूप का, आपके गुण का चिंतन करते हैं तो तुरंत मन की ग्लानि, मलिनता, दीनता-हीनता चली जाती है।' आप जगत का चिंतन करोगे और जगत में प्रीति करोगे तो जगत आपको कामी बनायेगा, क्रोधी बनायेगा, लोभी बनायेगा, मोही बनायेगा, चिंतित बनायेगा, विलासी बनायेगा, विकारी बनायेगा और जन्म-मरण के धक्कों में धकेलता रहेगा और प्रभु का चिंतन करोगे तो प्रभु का चिंतन आपको विभु बना देगा, सुहृद बना देगा, कल्पतरु बना देगा। जो महात्मा ऐसा चिंतन करते हैं, वे भक्तों के कल्पतरु हो जाते हैं। ❐

कौन है तुम्हारा जीवन-सारथी ?

- पूज्य बापूजी

तीन मित्र थे। उन्होंने शर्त रखी कि देखें, अधिक समय बदबू कौन सहन कर सकता है ? वे एक बूढ़ा बकरा, जिसके शरीर पर गंदगी, मैल लगी थी, ले आये और कमरे में रख दिया। एक मित्र कमरे के अंदर गया और पाँच मिनट में वापस आ गया कि 'अपने से यह बदबू सहन नहीं होती।' फिर दूसरा गया... गया और वापस आया। फिर तीसरा गया। तीसरा गया तो उसकी बदबू से बकरा ही बाहर आ गया।

अब यह है दृष्टांत। ऐसे ही हमारा अहंकार, हमारी मैली वासना जब भीतर चली जाती है आँख के द्वारा, कान के द्वारा, किसीके द्वारा तो हमारा आनंद बाहर चला जाता है, सुख भाग जाता है। वासना में इतनी बदबू होती है कि हमारी जान निकाल देती है वह। जीवरूपी बकरे को इतना सताती है वासना कि वह भी बेचारा कह उठता है कि 'मेरी तो जान निकल गयी है !'

आपने देखा होगा व्यवहार में, ऐसे-ऐसे काम करते हैं कि आपकी जान निकल जाती है। आप ऐसा महसूस करते हैं कि 'मकान बनाने की इच्छा में चक्कर खा के महाराज, मकान तो बना लेकिन हमारी तो जान निकल गयी। फलाना-फलाना काम करते हुए हमारी जान निकल गयी !' अनुभव होता है न ! तो वासना दिखती तो साफ-सुथरी, हट्टी-कट्टी है लेकिन वह अपनी जान को, अपनी मस्ती को, सुख को बाहर निकाल देती है। चुपचाप बैठे हैं और ऐसी कोई घड़ियाँ हैं जिनमें कोई वासना नहीं तो वह एकाध घड़ी इतनी महत्त्वपूर्ण है, वह एकाध

क्षण इतना सुखद है कि उस सुखद क्षण का इन्द्र के वैभव के साथ मुकाबला करो तो इन्द्र का वैभव भी तुच्छ दिखता है, इतनी उस निर्वासनिक अवस्था में शांति, आनंद, माधुर्य की झलकियाँ होती हैं।

देवताओं के पास सुख-सुविधाएँ ज्यादा होती हैं, वे भोगी होते हैं इसलिए परमात्मा को नहीं पा सकते हैं। दैत्यों में तमोगुण होता है इसलिए वे विवेक की गद्दी पर नहीं बैठ सकते। एक मनुष्य-शरीर ऐसा है कि न अति तमो है न अति सत्त्व, न अति भोग हैं। मनुष्य है मध्य का। अब जिधर का वह संग करे, चाहे गुणातीत तत्त्व का संग करे...

एक बात और समझ लेना। जो आदमी जैसा संग करता है, वह वैसा हो जाता है। तुच्छ काम करनेवाले व्यक्तियों का संग करो तो तुम्हारी प्रतिष्ठा भी तुच्छ होने लगती है। पवित्र आत्मा, परोपकारी आत्मा, संत, साधक जिनका हृदय ऊँचा है, चरित्र ऊँचा है, ऐसे व्यक्तियों का संग करते हैं तो आप ऊँचे होने लगते हैं। वासना अति तुच्छ है और इन्द्रियोंरूपी नाली के द्वारा वह मजा चाहती है। अगर आदमी वासना का संग करता है तो तुच्छ हो जाता है और विवेक का संग करता है तो परब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कारी ज्ञानीस्वरूप, ईश्वरस्वरूप हो जाता है। अगर हम विवेक का संग करते हैं तो हम ईश्वर के साथ हो जाते हैं और वासना का संग करते हैं तो नरक के साथ हो जाते हैं। हम मध्य में हैं। मनुष्य-जन्म एक जंक्शन है, अब जिधर को जायें।

वासना और कमजोरी के विचार आदमी का जितना सत्यानाश करते हैं, उतना तो मौत भी नहीं करती। मौत तो एक बार मारती है लेकिन कमजोर विचार और वासनाएँ करोड़ों जन्मों तक मारती रहेंगी। वासना जीव को अंधा कर देती है। अपने तुच्छ स्वभाव, मलिन स्वभाव से जीव इतने आक्रांत हो जाते हैं कि हृदय में बैठे हुए विश्वेश्वर का कोई पता ही नहीं ! तुम्हारे जीवन-रथ का सारथी कौन है ? अपने-आपसे पूछना चाहिए।

शरीर रथ है, इन्द्रियाँ घोड़े हैं। अब सारथी कामना है, काम है कि राम है ? बुद्धि निर्णय करे, मन उसके विषय में विचार करे और इन्द्रियाँ तदनुकूल चलें तो समझो आप राम तक पहुँच जायेंगे। इन्द्रियों ने देखा, मन ने उसकी प्राप्ति के लिए सोचा और बुद्धि उसमें लग गयी तो समझो बरबादी हो गयी। कभी-कभी आपका विवेक इन्कार करता है लेकिन इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि उधर को खींचते हैं। बुद्धि कुछ कह रही है और हृदय कुछ और कह रहा है तो उस वक्त बुद्धि की बात को ठुकरा दो क्योंकि वह भीतरवाला अंतर्यामी जो है न, तुम्हारा हृदय जो है न, वह ईश्वर के करीब होता है, विवेक के करीब होता है। ❑

साधु-संतों से कर ले मेल

रोष में ही सब छुपे हैं दोष,
दगा द्वेष ना दिल में पोष।
ईर्ष्या निंदा द्वैत पाप है,
मत दुष्कर्मों से तू खेल॥

मलिन चित उपजे अज्ञान,
अच्छे बुरे का रहे न ज्ञान।
अहं काम क्रोध से होता संताप है,
मिले चौरासी चक्कर की जेल॥

कर न किसीकी कभी बुराई,
सत्कर्म से कर ले नेक कमाई।
मद लोभ पाप का बाप है,
तू है मुसाफिर जग है रेल॥

जीवभाव सब मिथ्या माया,
झूठी कंचन कामिनी काया।
परहित से मिलता संतोष है,
बो मत काँटों की तू बेल॥

लांछन लगाना बहुत बुरा है,
स्वर्ण तो माटी में भी खरा है।
हिंसा व्यभिचार से काँप सदा,
पापी दुष्टों को मत झेल॥

हर नूरे नयन में झाँक जरा,
वही रूप स्वरूप है निखरा।
'साक्षी' समाया अपना-आप है,
साधु-संतों से कर ले मेल॥

- जानकी चंदनानी 'साक्षी', अहमदाबाद।

जीने-मरने की कला

(आत्मनिष्ठ पूज्य बापूजी के मुखारविंद से निःसृत ज्ञानगंगा)

भगवान श्रीकृष्ण के कहने से पितामह भीष्म ने बाणशय्या पर रहकर भी युधिष्ठिर को उपदेश दिया और जीवन जीने की कला सिखायी। आखिर में अपना चित्त सच्चिदानंद परमात्मा में लगाया और शरीर छोड़ दिया।

प्रत्येक मनुष्य को जीवन जीने की कला सीख लेनी चाहिए और मौत आये उसके पहले मरने की कला भी सीख लेनी चाहिए। जो जीवन जीने की कला नहीं सीख पाता है वह जीवन भर भारी दुःख उठाता है और जो मरने की कला नहीं सीख पाता है वह बार-बार मरता रहता है।

आप जीवन में सुख-शांति चाहते हो तो आपको दया, प्रेम, क्षमा, परदुःखकातरता आदि सद्‌गुणों का विकास करना चाहिए और मरकर भी अमर होना चाहते हो तो अमर आत्मा का ज्ञान पाना चाहिए।

जीवन में क्षमा का गुण लाने से सुख-शांति अपने-आप आ जाती है। आप अपने घर में हो चाहे नौकरी-धंधे में हो, अगर कभी किसीसे कुछ गलती हो जाय तो उसे क्षमा कर देना चाहिए। घर में बहू से कोई गलती हो जाय तो सास को उसके प्रति द्वेष की गाँठ नहीं बाँधनी चाहिए, वरन् प्रतिशोध की भावना रखे बिना मातृहृदय की उदारता से, प्रेम से उसे समझाना चाहिए तो दुबारा गलती होने की सम्भावना कम हो जाती है। अगर सास की कोई बात बहू को नहीं जँचती है तो विनम्रता से अपनी बात बताकर मामला हल कर लेना चाहिए, न कि सास के प्रति द्वेष की गाँठ बाँधनी चाहिए। ऐसे ही देवरानी-जेठानी के बीच या भाई-भाई के बीच या बाप-बेटे के बीच या पड़ोसी-पड़ोसी के बीच कुछ अनबन हो जाय तो उदारता और क्षमा का व्यवहार करना चाहिए।

कभी ऐसा भी होता है कि किसी कारणवश किसीका 'मूड' खराब हो गया हो, 'मूड ऑफ' हो गया हो तो व्यवहार में जरा गड़बड़ हो जाती है। उस वक्त सामनेवाला अपने चित्त को समता में रखकर मामला सँभाल लेता है तो बात वहीं पर रुक जाती है, लेकिन सामनेवाला भी वैसे ही उत्तेजना-आवेश में आ जाता है तब बात बढ़ जाती है।

अगर किसी पत्नी को उसके पति ने कुछ कहा हो या पत्नी से पति की अनबन हो गयी हो, तब वह फरियाद के रूप में अपनी सहेली से या मित्र से कहने लगती है कि 'हमेशा तो ठीक से बातचीत करते हैं। इतनी गलती भी नहीं थी फिर भी नाराज हो गये और ऐसा-वैसा बोलने लगे। ऐसा करना चाहिए क्या ?' अरे...! नाराज हो गये तो हो गये। कोई भी आदमी हमेशा अच्छी तरह से बात करे ऐसा किसने कहा ? मन है, कभी नाराज भी होगा, कभी राजी भी होगा... कभी कोई ठीक से बात करे और कभी ऐसा-वैसा बोल दे तो हमें चाहिए कि खुद को सँभालें। अपनी ओर से सामनेवाले को दुःखप्रद वचन न सुनायें। सामनेवाले का तो चित्त उद्विग्न हुआ हो ६० प्रतिशत और ४० प्रतिशत हम भी गुस्सा करें तो १०० प्रतिशत हो जायेगा। फिर तो पड़ोसी भी खिड़की से झाँकने लगेंगे कि 'भाई ! क्या हुआ ?' घर में ही युद्धक्षेत्र ! ऐसा क्यों होता है ? क्योंकि जीने की कला नहीं जानते हैं। अपने पास जो

कुछ होता है उसमें सबकी आसक्ति होती है। पति कहता है : 'ऐसा ही होना चाहिए' और पत्नी कहती है : 'ऐसा ही होना चाहिए।' ऐसे ही सास-बहू हो, भाई-भाई हो, देवरानी-जेठानी हो, भाभी-ननद हो, सबकी अपनी-अपनी मान्यताएँ होती हैं कि 'यही ठीक है... उसे ऐसा करना चाहिए' - ऐसी अकड़ में आ जाते हैं आमने-सामने और फिर हो जाता है झगड़ा ! बात तो जरा-सी होती है परंतु उसमें सबकी पकड़ होती है, आसक्ति होती है, आग्रह होता है इसलिए झगड़े हो जाते हैं। 'ऐसा ही होना चाहिए' का आग्रह होता है तथा उसमें कोई विघ्न डालता है और विघ्न डालनेवाला यदि छोटा होता है तो क्रोध होता है और बड़ा होता है तो भय होता है।

सारे झगड़ों और सारी मुसीबतों का कारण क्या है ? बाहर के जगत के व्यवहार को अपनी वासनाओं की डोर से बाँध रखने का जो आग्रह है उससे ही क्लेश होता है, दुःख पैदा होता है। मैं तो आपसे यह कहता हूँ कि दुःख पैदा ही न हो, उसकी सावधानी रखनी चाहिए और साथ में यह भी कहता हूँ कि दुःख पैदा न हो उसकी सावधानी रखना भी इतना आसान नहीं है।

आपका मन सुख चाहता है और सुख भी कैसा ? स्थायी सुख। कुछ भी करके आप सुख चाहते हो इसलिए आग्रह रखते हो। किसीको सताने के लिए आप आग्रह नहीं रखते हो, वरन् सुख के लिए आग्रह रखते हो कि 'ऐसा करूँ तो मुझे सुख मिले... ऐसा हो तब मुझे सुख मिले...' यह परिस्थितियों को अनुकूल बनाने का जो आग्रह है, इसकी गहराई में देखो तो सुख की इच्छा ही है।

अच्छा, तो अब क्या करें ? किसी भी वस्तु या परिस्थिति का आग्रह न रखें। लेकिन भीतर सुख की इच्छा है ! और जब तक सुख नहीं मिलता तब तक इच्छा भी नहीं मिटती है तो फिर क्या करें ? हम 'मन्मया' (भगवान के 'मैं' में तल्लीन) हो जायें - 'वाह प्रभु ! तेरी मर्जी पूरण हो। जो हुआ अच्छा हुआ, जो होगा अच्छा ही होगा।' जितना आप ईश्वर की शरण होते जाओगे उतना ईश्वरमय होते जाओगे। जितना ईश्वरमय होते जाओगे उतना भीतर का सुख पा लोगे और बाहर की परिस्थितियों का आग्रह करके सुख पाने की बेवकूफी छूट जायेगी।

बाहर की वस्तुओं का या परिस्थितियों का जो आग्रह है, आकर्षण है वह हमें भय, शोक, क्रोध और जिम्मेदारी में घसीट लाता है। जिससे सब शोभायमान हो रहा है, उस परम प्यारे के आकर्षण का पता नहीं इसलिए इन बाहरी आकर्षणों में हम हस्ताक्षर कर बैठते हैं और बाहरी आकर्षणों में हस्ताक्षर कर लेते हैं तो 'मन्मया' नहीं हो पाते हैं। 'मन्मया' नहीं हो पाते हैं इसलिए सारे दुःख, मुसीबतें आ टपकती हैं।

बाहर मिलता सो मिले, अंतर सबसों एक।

ऐसा ज्ञान और विवेक बनाये रखें। बाहर का मिलना-जुलना ठीक है लेकिन अंदर में समझें कि 'यह सब स्वप्न है। ये सब आने-जानेवाली परिस्थितियाँ हैं। मेरा तो मिलनहार वही है, मेरा कृष्णतत्त्व, मेरा रामतत्त्व, मेरा गुरुतत्त्व, मेरा आत्मतत्त्व...' ऐसा अगर सजगता से भान रहे तो भय, शोक, राग और क्रोध आदि क्षीण होते जायेंगे। जितने-जितने भय, राग और क्रोध दूर होते जायेंगे, उतने-उतने आप 'मन्मया' होते जाओगे।

यह बात ठीक से समझ लेना। बात जरा सूक्ष्म है ! सेवा-सत्कर्म करना अच्छा है लेकिन उसमें भी कुछ-न-कुछ बाहर की वस्तुओं की पराधीनता रहती है। धन की, सेवा लेनेवाले की, सेवा करनेवाले तन की, सेवा करने का निर्णय करनेवाली बुद्धि की तो पराधीनता बनी ही रहती है। पूर्ण सुख तो यहाँ भी नहीं मिलता है। पूर्ण सुख तब मिलता है जब पूर्ण तत्त्व का बोध हो जाता है। पूर्ण स्वतंत्रता तब मिलती है जब पूर्ण आत्मा का 'मैं' रूप में साक्षात्कार हो जाता है। (क्रमशः) ❑

उत्तम संतानप्राप्ति के लिए

ग्रह-नक्षत्रों का असर मनुष्यों-प्राणियों पर ज्यादा होता है। 'बृहस्पति, बुध, शुक्र, चन्द्र' - ये शुभ ग्रह हैं। उसमें बृहस्पति अत्यंत शुभ ग्रह है। बृहस्पति जब बलवान होता है तब पुण्यात्माएँ पृथ्वी पर अवतरित होती हैं। बलवान बृहस्पति जिसकी जन्म-कुण्डली में होता है, उसमें आध्यात्मिकता, प्रामाणिकता (ईमानदारी), अच्छाई, सच्चारित्र्य, विद्या और उत्तम विशेषताएँ होती हैं। इसलिए गर्भाधान ऐसे समय में होना चाहिए जिससे बच्चे का जन्म बलवान उत्तम ग्रहों की स्थिति में हो। वर्तमान समय में दिनांक १३ जून २०११ तक का समय गर्भाधान के लिए उत्तम है। उत्तम संतान की इच्छावाले दम्पति को अधिकाधिक गुरुमंत्र का जप या हो सके तो चालीस-चालीस दिन के दो-तीन अनुष्ठान करके उत्तम संतान हेतु परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए, तत्पश्चात् गर्भाधान करना चाहिए। वैसे ५ जनवरी २०१४ से १८ सितम्बर २०१४ तक का समय तो गर्भाधान के लिए अतिशय उत्तम है। गर्भाधान से पहले कम-से-कम १-२ माह का ब्रह्मचर्य अवश्य रखें। गाय का दूध, घी, खीर और सात्त्विक आहार लें। अण्डा, मांस, मदिरा, तम्बाकू, बासी भोजन जैसे तामसी पदार्थों का सेवन न करें। गर्भाधान के बाद ज्यों-ज्यों गर्भ बढ़े, स्त्री को वजन उठाना, हर प्रकार की वाहन-यात्रा, व्यायाम, नीचे झुककर काम करना (जैसे, झाड़ू-पोंछा) आदि कार्यों से बचते रहना चाहिए। लाल-हरी मिर्च, हींग, मेथी, राई, गाजर, कपासिया तेल, गरम दवाइयों और गरम पदार्थों का सेवन न करें।

नौकरी करनेवाली महिलाओं को गर्भाधान के दिनों में और बाद के दिनों में शारीरिक-मानसिक आराम के लिए खास ध्यान देना चाहिए। पुरुषों को भी शारीरिक आराम और मानसिक प्रसन्नता के बाद गर्भाधान के लिए प्रवृत्त होना योग्य है।

***

स्वस्थ दीर्घायुष्य का अधिकारी कौन ?

ब्रह्मचारी मिताहारः सर्वभूतहिते रतः।

'ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाला, अल्प भोजन करनेवाला व सब प्राणियों के हित में तत्पर व्यक्ति स्वस्थ दीर्घायु का अधिकारी होता है।'

(संवर्तस्मृति : २१६)

व्रत, पर्व एवं त्यौहार

१४ फरवरी : मातृ-पितृ पूजन दिवस, जया एकादशी

१६ फरवरी : गुरु गोरखनाथ जयंती

१७ फरवरी : व्रत पूर्णिमा, गुरुपुष्यामृत योग (८-१४ तक)

१८ फरवरी : माघी पूर्णिमा, संत रविदास जयंती, वसंत ऋतु प्रारम्भ

१९ फरवरी : छत्रपति शिवाजी जयंती (दिनांक -अनुसार)

२६ फरवरी : समर्थ रामदास नवमी

२८ फरवरी : विजया एकादशी

२ मार्च : महाशिवरात्रि व्रत, रात्रि-जागरण, शिव-पूजन (निशीथकाल : रात्रि १२-२७ से १-१५)

४ मार्च : द्वापर युगादि तिथि

८ मार्च : अंगारकी-मंगलवारी चतुर्थी (९-४५ से)

'वेलेन्टाईन डे' नहीं 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायें

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

(मातृ-पितृ पूजन दिवस पर्व : १४ फरवरी)

'वेलेन्टाईन डे' मनाना बहुत हानिकारक है। 'वेलेन्टाईन डे' नहीं 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' अथवा 'गणपति-दिवस' मनाओ। गणपतिजी ने शिव-पार्वतीजी का पूजन किया और शिव-पार्वतीजी ने उनको गले लगाया और आशीर्वाद दिया : ''बेटा ! तू उम्र में तो कार्तिक से छोटा है लेकिन तेरी समझ अच्छी है, तेरा पूजन पहले होगा।''

'वेलेन्टाईन डे' क्यों मनाना ! गणेशजी जैसा 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाओ। युवक-युवती मिलेंगे तो विनाश-दिवस बनेगा। इस दिन बच्चे-बच्चियाँ माता-पिता का आदर-पूजन करें और उनके सिर पर पुष्प रखें, प्रणाम करें तथा माता-पिता अपनी संतान को प्रेम करें। संतान अपने माता-पिता के गले लगे। इससे वास्तविक प्रेम का विकास होगा। बेटे-बेटियाँ माता-पिता में ईश्वरीय अंश देखें और माता-पिता बच्चों में ईश्वरीय अंश जगायें। ॐ... ॐ... अमर आत्मा का सामर्थ्य जगायें। जैसे गणपति ने शिव-पार्वती का पूजन किया और शिव-पार्वती ने 'ॐ सिद्धो भव, ॐ प्रसिद्धो भव, ॐ सर्वविघ्नहर्ता भव।'- ऐसा आशीर्वाद दिया।

बच्चे इस प्रकार माँ-बाप का पूजन करेंगे तो माँ-बाप का दिल खिलेगा, उनकी दुआएँ मिलेंगी, बहुत भला होगा। 'वेलेन्टाईन डे' नहीं मनाना, नहीं तो मार मिलेगी, पतन होगा जैसे अन्य देशों में हो रहा है। लवर-लवरी एक-दूसरे को फूल देंगे, मिलेंगे, कामुक विचार उठेंगे और फिर 'आई लव यू।' अरे ! सत्यानाश यू। लव तो क्या करेगा ! धातु-रज क्षीण कर देगा, कमर कमजोर कर देगा, जल्दी बुड्ढा-बुड्ढी बना देगा। 'आई लव यू' छी... छी...! क्या लव-लव करते हैं ! ये तो काम-विकार को 'लव' कहते हैं, छी... ! प्रेम तो निर्दोष होता है, प्रेम तो अल्लाह से, परमात्मा से मिलाता है। इश्क मिजाजी, इश्क इलाही, इश्क नूरानी... अल्लाह कहो, गॉड कहो, भगवान कहो, परम सत्ता का ही नाम है 'प्रेम'। परम सुख, परम चेतना का नाम है 'प्रेम'। वही राम-रहीम और गॉड का असली स्वरूप है, इसीमें मानवता का मंगल है। सच्चे प्रेमस्वभाव से केवल भारतवासियों का ही नहीं, विश्वमानव का कल्याण होगा।

प्रेम में और काम में बहुत फर्क है। काम कमजोर करता है और निर्दोष प्रेम बलवान बनाता है। काम में झगड़े होते हैं, तलाक होता है और प्रेम दिन-दिन बढ़ता है। प्रेम में परमात्मा की कृपा होती है और काम में विकारों की उत्तेजना होती है। काम-विकार में बाद में अशांति आती है और प्रेम में शांति बढ़ती है। प्रेम में निर्विकारिता और काम में विकार होता है। प्रेम में अविनाशी और काम में नाश होना होता है। काम जड़ शरीर में, हाड़-मांस में ले आयेगा और प्रेम चैतन्य परमात्मा में ले आयेगा।

कामना में इच्छा बढ़ती है और प्रेम में इच्छा शांत होती है। इच्छा शांत होने से बुद्धि तेजस्वी होती है, चाहे तीन पढ़ा हो तब भी सबका बाप बन जायेगा। और इच्छा बढ़ गयी तो चाहे कैसी भी डिग्रियाँ हों, चाहे तैंतीस पढ़ा हो, तुच्छ हो जाता है, दारू पी के पड़ा रहता है, **(शेष पृष्ठ २२ पर)**

प्यार से पोषण करें सद्गुणों का

महात्मा हरिद्रुमत गांधार देश की ओर जा रहे थे । मार्ग में एक ऐसा गाँव पड़ा जहाँ के सभी लोग बूढ़े, जवान, स्त्रियाँ और बच्चे भी भगवान को प्रेम करनेवाले, भगवान की भक्ति करनेवाले थे। चलते-चलते अचानक महाराज को एक बालक के रुदन की आवाज सुनायी दी । जरा रुककर सुना तो पता चला कि कोई माँ अपने बच्चे को डाँट-फटकार रही है । महाराज ने दरवाजे पर जाकर उस महिला से पूछा : ''माताजी ! क्यों पीट रही हो इस मासूम बच्चे को ?''

महिला बोली : ''महाराज ! क्या कहूँ, पूरे गाँव में केवल एक मेरा ही यह बालक ऐसा है जो न तो भगवान की पूजा करता है, न प्रार्थना, न कीर्तन, न सत्संग में जाता है, न भगवान को मानता ही है, एकदम घोर नास्तिक जैसा है । इसके कारण हमें अपमानित होना पड़ता है, लोगों की बातें सुननी पड़ती हैं, इसीके कारण अपयश होता है। अब आप ही बताइये, क्रोध न करूँ तो क्या करूँ ?''

संतों का तो एक ही काम होता है - लोगों का भला करना । चलते-फिरते भी लोगों को सही मार्ग बताते रहते हैं, उन्हें भगवान के रास्ते लगाते रहते हैं। हरिद्रुमत बोले : ''माताजी ! प्यार से ही बच्चों की कमियों, गलतियों को दूर किया जा सकता है, क्रोध से नहीं । ज्यादा रोकटोक करने से तो बच्चे विरोधी हो जाते हैं । जब तक बालक छोटा है तब तक उसे प्यार करो । बड़ा हो जाय, दस-बारह, पन्द्रह वर्ष का तो उसे सीख दो, अनुशासन में रखो । जब सोलह वर्ष का हो तब उससे मित्र जैसा व्यवहार करना चाहिए, फिर डंडे से काम नहीं लेना चाहिए । आप इस बालक को प्रगाढ़ प्रेम, आत्मीयतायुक्त व्यवहार तथा अपनी स्नेहिल निष्ठा से ही सीख दीजिये ।

दूसरा, आप जब जप-ध्यान, पूजा-पाठ करने बैठें तो इसे भी अपने पास बिठा लें। भगवान से प्रार्थना करें कि 'हे प्रभु ! इसे भी सद्बुद्धि दो कि यह आपकी भक्ति करे ।' बच्चे कहने की अपेक्षा देखकर जल्दी सीखते हैं, उनमें अनुसरण करने का गुण होता है । जैसा देखते हैं वैसा करने लग जाते हैं, फिर चाहे वह अच्छा हो या बुरा। आपको जप-ध्यान करते देखकर यह भी करने लगेगा । बालक को ईश्वर की ओर ले जाने का यह एक सरल मार्ग है ।'' यह कहकर महाराज आगे बढ़ गये ।

उस माता ने महात्माजी की आज्ञा का पालन किया और बालक को प्रगाढ़ प्रेम दिया । प्रेममूर्ति महात्मा का आशीर्वाद, शुभ संकल्प और माँ के उस अनन्य प्रेम का परिणाम ऐसा हुआ कि वह बालक आगे चलकर महान ज्ञानी उद्दालक ऋषि के नाम से जगत में प्रसिद्ध हुआ ।

आप भी अपने बच्चों को किन्हीं ब्रह्मनिष्ठ ज्ञानी महापुरुष के दर्शन करने व सत्संग सुनने ले जायें और उन्हें प्रेम से समझायें । भगवन्नाम की दीक्षा दिला दें । आप भी मंत्रजप करें, उन्हें भी अपने पास बिठाकर जप करायें तो उनमें से कोई कैसा भी उद्दण्ड क्यों न हो, आपके कुल को जगमगानेवाला कुलदीप बन जायेगा । □

गुरुभक्ति-योग

- ब्रह्मलीन स्वामी श्री शिवानंदजी सरस्वती

गुरुभक्तियोग की महत्ता

✽ गुरुभक्तियोग में शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक - हर प्रकार के अनुशासन का समावेश हो जाता है। इससे मनुष्य आत्मप्रभुत्व पा सकता है एवं आत्मसाक्षात्कार कर सकता है।

✽ गुरुभक्तियोग मन की शक्तियों पर विजय प्राप्त करने के लिए विज्ञान एवं कला है।

गुरु और शिष्य

गुरु की महत्ता

✽ जो आँखें गुरु के चरणकमलों का सौंदर्य नहीं देख सकतीं, वे आँखें सचमुच अंध हैं।

✽ जो कान गुरु की लीला की महिमा नहीं सुनते, वे कान सचमुच बहरे हैं।

✽ गुरुरहित जीवन मृत्यु के समान है।

✽ गुरुकृपा की सम्पत्ति जैसा और कोई खजाना नहीं है।

✽ भवसागर को पार करने के लिए गुरु के सत्संग जैसी और कोई सुरक्षित नौका नहीं है।

✽ आध्यात्मिक गुरु जैसा और कोई मित्र नहीं है।

✽ गुरु के चरणकमल जैसा और कोई आश्रय नहीं है।

✽ सदैव गुरु की रट लगाओ।

गुरु के प्रति भक्तिभावना

✽ श्रद्धा, भक्ति और तत्परता के फूलों से गुरु की पूजा करो।

✽ आत्मसाक्षात्कार के मंदिर में गुरु का सत्संग प्रथम स्तम्भ है।

✽ ईश्वरकृपा गुरु का स्वरूप धारण करती है।

✽ गुरु के दर्शन करना ईश्वर के दर्शन करने के बराबर है।

✽ जिसने सद्गुरु के दर्शन नहीं किये वह मनुष्य अंधा ही है।

✽ धर्म केवल एक ही है और वह है गुरु के प्रति भक्ति एवं प्रेम का धर्म।

✽ जब आपको दुनियावी अपेक्षा नहीं रहती, तब गुरु के प्रति भक्तिभाव जागता है।

✽ आत्मवेत्ता गुरु के संग के प्रभाव से आपका जीवनसंग्राम सरल बन जायेगा।

✽ गुरु का आश्रय लो और सत्य का अनुसरण करो।

✽ अपने गुरु की कृपा में श्रद्धा रखो और अपने कर्तव्य का पालन करो।

✽ गुरु की आज्ञा का अतिक्रमण खुद अपनी कब्र खोदने के बराबर है।

✽ सद्गुरु शिष्य पर सतत आशीर्वाद बरसाते हैं। आत्मसाक्षात्कारी गुरु जगद्गुरु हैं, परम गुरु हैं।

✽ सद्गुरु का हृदय सौंदर्य का धाम है।

गुरु की सेवा

✽ जीवन का ध्येय गुरु की सेवा करने का बनाओ।

✽ जीवन का हरेक कटु अनुभव गुरु के प्रति आपकी श्रद्धा की कसौटी है।

✽ शिष्य कार्य की गिनती करता है, जबकि गुरु उसके पीछे निहित हेतु और इरादे की तुलना करते हैं।

✽ गुरु के कार्य को संदेहपूर्वक देखना सबसे बड़ा पाप है।

✽ गुरु के समक्ष अपना दम्भपूर्ण दिखावा करने की कभी कोशिश मत करना। ❑

आपके जीवन में शिव-ही-शिव हो

(पूज्य बापूजी की कल्याणमयी मधुमय वाणी)

(महाशिवरात्रि : २ मार्च)

चार महारात्रियाँ हैं - जन्माष्टमी, होली, दिवाली और शिवरात्रि। शिवरात्रि को 'अहोरात्रि' भी बोलते हैं। इस दिन ग्रह-नक्षत्रों आदि का ऐसा मेल होता है कि हमारा मन नीचे के केन्द्रों से ऊपर आये। देखना, सुनना, चखना, सूँघना व स्पर्श करना - इस विकारी जीवन में तो जीव-जंतु भी होशियार हैं। बकरा जितना काम-विकार में होशियार है उतना मनुष्य नहीं हो सकता। बकरा एक दिन में चालीस बकरियों के साथ काला मुँह कर सकता है, मनुष्य करे तो मर जाय। यह विकार भोगने के लिए तो बकरा, सुअर, खरगोश और कई नीच योनियाँ हैं। विकार भोगने के लिए तुम्हारा जन्म नहीं हुआ है।

विकारी शरीरों की परम्परा में आते हुए भी निर्विकार नारायण का आनंद-माधुर्य पाकर अपने शिवस्वरूप को जगाने के लिए शिवरात्रि आ जाती है कि 'लो भाई ! तुम उठाओ इस मौके का फायदा...।'

शिवजी कहते हैं कि 'मैं बड़े-बड़े तपों से, बड़े-बड़े यज्ञों से, बड़े-बड़े दानों से, बड़े-बड़े व्रतों से इतना संतुष्ट नहीं होता हूँ जितना शिवरात्रि के दिन उपवास करने से होता हूँ।' अब शिवजी का संतोष क्या है ? तुम भूखे मरो और शिवजी खुश हों, क्या शिव ऐसे हैं ? नहीं, भूखे नहीं मरोगे, भूखे रहोगे तो शरीर में जो रोगों के कण पड़े हैं, वे स्वाहा हो जायेंगे और जो आलस्य, तन्द्रा बढ़ानेवाले विपरीत आहार के कण हैं वे भी स्वाहा हो जायेंगे और तुम्हारा जो छुपा हुआ सत् स्वभाव, चित् स्वभाव, आनंद स्वभाव है, वह प्रकट होगा। शिवरात्रि का उपवास करके, जागरण करके देख लो। मैंने तो किया है। मैंने एक शिवरात्रि का उपवास घर पर किया था, ऐसा फायदा हुआ कि मैं क्या-क्या वर्णन करूँ ! क्या-क्या अंतर्प्रेरणा हुई, क्या-क्या फायदा हुआ उसका वर्णन करना मेरे बस का नहीं है। नहीं तो न जाने घिस-पिट के क्या हालत होती सत्तर की उम्र में ! 'अरे बबलू ! ऐंह... अरे जरा उठा दे... जरा बैठा दे।' - यह हालत होती।

इस दिन जो उपवास करे, उसे निभाये। जो बूढ़े हैं, कमजोर हैं, उपवास नहीं रख सकते, वे लोग थोड़ा अंगूर खा सकते हैं अथवा एक छोटे-मोटे नारियल का पानी पी सकते हैं, ज्यादा पीना ठीक नहीं।

शरीर में जो जन्म से लेकर विजातीय द्रव्य हैं, पाप-संस्कार हैं, वासनाएँ हैं उन्हें मिटाने में शिवरात्रि की रात बहुत काम करती है।

शिवरात्रि का जागरण करो और 'बं' बीजमंत्र का सवा लाख जप करो। संधिवात (गठिया) की तकलीफ दूर हो जायेगी। बिल्कुल पक्की बात है ! एक दिन में ही फायदा ! ऐसा बीजमंत्र है शिवजी का। वायु मुद्रा करके बैठो और 'बं बं बं बं बं' जप करो। जैसे जनरेटर घूमता है तो बिजली बनती है, फिर गीजर भी चलेगा और फ्रिज भी चलेगा। दोनों विपरीत हैं लेकिन बिजली से दोनों चलते हैं। ऐसे ही 'बं बं' से विपरीत धर्म भी काम में आ जाते हैं। बुढ़ापे में तो वायु-संबंधी रोग ज्यादा होते हैं। जोड़ों में दर्द हो गया, यह पकड़ गया-वह पकड़ गया... 'बं बं' जपो, उपवास करो, देखो अगला दिन कैसा स्फूर्तिवाला होता है।

शिवरात्रि की रात का आप खूब फायदा उठाना। विद्युत के कुचालक आसन का उपयोग करना। भीड़भाड़ में, मंदिर में नहीं गये तो ऐसे ही **'ॐ नमः शिवाय'** जप करना। मानसिक मंदिर में जा सको तो जाना। मन से ही की हुई पूजा षोडशोपचार की पूजा से दस गुना ज्यादा हितकारी होती है और अंतर्मुखता ले आती है।

शिवजी का पत्रम्-पुष्पम् से पूजन करके मन से मन का संतोष करें, फिर **'ॐ नमः शिवाय... ॐ नमः शिवाय...'** शांति से जप करते गये। इस जप का बड़ा भारी महत्त्व है। अमुक मंत्र की अमुक प्रकार की रात्रि को शांत अवस्था में, जब वायुवेग न हो आप सौ माला जप करते हैं तो आपको कुछ-न-कुछ दिव्य अनुभव होंगे। अगर वायु-संबंधी बीमारी है तो 'बं बं बं बं बं' सवा लाख जप करते हो तो अस्सी प्रकार की वायु-संबंधी बीमारियाँ गायब ! अगर तुम प्रणव की १२० मालाएँ करते हो रोज और ऐसे पाँच लाख मंत्रों का जप करते हो तो आपकी मंत्रसिद्धि की शक्तियाँ जागृत होने लगती हैं। 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र तो सब बोलते हैं लेकिन इसका छंद कौन-सा है, इसके ऋषि कौन हैं, इसके देवता कौन हैं, इसका बीज क्या है, इसकी शक्ति क्या है, इसका कीलक क्या है - यह मैं बता देता हूँ। **अथ ॐ नमः शिवाय मंत्रः। वामदेव ऋषिः। पंक्तिः छंदः। शिवो देवता। ॐ बीजम्। नमः शक्तिः। शिवाय कीलकम्।** अर्थात् ॐ नमः शिवाय का कीलक है 'शिवाय', 'नमः' है शक्ति, 'ॐ' है बीज... हम इस उद्देश्य से (मन-ही-मन अपना उद्देश्य बोलें) शिवजी का मंत्र जप रहे हैं - ऐसा संकल्प करके जप किया जाय तो उसी संकल्प की पूर्ति में मंत्र की शक्ति काम देगी।

अगर आप शिव की पूजा-स्तुति करते हैं और आपके अंदर में परम शिव को पाने का संकल्प हो जाता है तो इससे बढ़कर कोई उपहार नहीं और इससे बढ़कर कोई पद नहीं है। भगवान शिव से प्रार्थना करें : 'इस संसार के क्लेशों से बचने के लिए, जन्म-मृत्यु के शूलों से बचने के लिए हे भगवान शिव ! हे साम्बसदाशिव ! हे शंकर ! मैं आपकी शरण हूँ, मैं नित्य आनेवाली संसार की यातनाओं से हारा हुआ हूँ, इसलिए आपके मंत्र का आश्रय ले रहा हूँ। आज के शिवरात्रि के इस व्रत से और मंत्रजप से तुम मुझ पर प्रसन्न रहो क्योंकि तुम अंतर्यामी साक्षी-चैतन्य हो। हे प्रभु ! तुम संतुष्ट होकर मुझे ज्ञानदृष्टि प्राप्त कराओ। सुख और दुःख में मैं सम रहूँ। लाभ और हानि को सपना समझूँ। इस संसार के प्रभाव से पार होकर इस शिवरात्रि के वेदोत्सव में मैं पूर्णतया अपने पाप-ताप को मिटाकर आपके पुण्यस्वभाव को प्राप्त करूँ।'

शिवधर्म पाँच प्रकार का कहा गया है : एक तो तप (सात्त्विक आहार, उपवास, ब्रह्मचर्य) शरीर से, मन से, पति-पत्नी, स्त्री-पुरुष की तरफ के आकर्षण का अभाव। आकर्षण मिटाने में सफल होना हो तो **'ॐ अर्यमायै नमः... ॐ अर्यमायै नमः...'** यह जप शिवरात्रि के दिन कर लेना, क्योंकि शिवरात्रि का जप कई गुना अधिक फलदायी कहा गया है। दूसरा है भगवान की प्रसन्नता के लिए सत्कर्म, पूजन-अर्चन आदि (मानसिक अथवा शारीरिक), तीसरा शिवमंत्र का जप, चौथा शिवस्वरूप का ध्यान और पाँचवाँ शिवस्वरूप का ज्ञान। शिवस्वरूप का ज्ञान - यह आत्मशिव की उपासना है। चिता में भी शिवतत्त्व की सत्ता है, मुर्दे में भी शिवतत्त्व की सत्ता है तभी तो मुर्दा फूलता है। हर जीवाणु में शिवतत्त्व है। तो इस प्रकार अशिव में भी शिव देखने के नजरियेवाला ज्ञान, दुःख में भी सुख को ढूँढ़ निकालनेवाला ज्ञान, मरुभूमि में भी वसंत और गंगा लहरानेवाला श्रद्धामय नजरिया, दृष्टि यह आपके जीवन में शिव-ही-शिव लायेगी। ❑

जया एकादशी

(१४ फरवरी)

('जया एकादशी' और 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का अवसर एक साथ आ रहा है। युवक-युवती एक-दूसरे को फूल दे के जो प्रेम-दिवस मनाते हैं, उसमें तो विनाश है और माता-पिता का पूजन करने में अंतरात्मा की प्रसन्नता, संयम, सद्गुण के फूल खिलाने का अवसर है। धन्य हैं वे बच्चे जो मातृ-पितृ पूजन करके सद्गुणों के फूल खिलाते हैं! धन्य हैं वे माँ-बाप जो दिव्य प्रेरणा की तरफ बच्चों को ले जाते हैं।

धिक्कार है उन युवक-युवतियों को जो एक-दूसरे पर बुरी नजरें डाल के फलाना डे, ढिमका डे करके सत्यानाश करते हैं! धनभागी हैं वे जो 'संयम-दिवस' मनाते हैं।

'जया एकादशी' और 'मातृ-पितृ पूजन दिवस', १४ फरवरी का दिवस संयम-सदाचार का प्रसाद पहुँचाने का मंगल दिवस है।

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता॥

ॐ आनंद, ॐ शांति... सचमुच में मधुर शांति... मधुर मातृ-पितृ पूजन दिवस का मधुर मिलन! काम-विकार नहीं, रामरस, हरिरस, प्रभुरस... ॐ ॐ ॐ... मन-ही-मन हँसो... ॐ आनंद, ॐ शांति... ॐ उद्यम, ॐ साहस, ॐ धैर्य, ॐ बुद्धि, ॐ शक्ति, ॐ पराक्रम, ॐ संयम - ये गुण जहाँ होते हैं, कदम-कदम पर परमात्मा उनका मंगल करते हैं, सहायता देते हैं, सत्प्रेरणा देते हैं।)

युधिष्ठिरजी ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा : ''भगवन्! कृपा करके यह बताइये कि माघ मास के शुक्ल पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है, उसकी विधि क्या है तथा उसमें किस देवता का पूजन किया जाता है?''

भगवान श्रीकृष्ण बोले : ''राजेन्द्र! माघ मास के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है, उसका नाम 'जया' है। वह सब पापों को हरनेवाली उत्तम तिथि है। पवित्र होने के साथ ही पापों का नाश करनेवाली तथा मनुष्यों को भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाली है। इतना ही नहीं, वह ब्रह्महत्या जैसे पाप तथा पिशाचत्व का भी विनाश करनेवाली है। उसका व्रत करने पर मनुष्यों को कभी प्रेतयोनि में नहीं जाना पड़ता। इसलिए राजन्! प्रयत्नपूर्वक 'जया' नाम की एकादशी का व्रत करना चाहिए।

एक समय की बात है। स्वर्गलोक में देवराज इन्द्र राज्य करते थे। देवगण पारिजात वृक्षों से युक्त नंदनवन में अप्सराओं के साथ विहार कर रहे थे। पचास करोड़ गंधर्वों के नायक देवराज इन्द्र ने स्वेच्छानुसार वन में विहार करते हुए बड़े हर्ष के साथ नृत्य का आयोजन किया। गंधर्व उसमें गान कर रहे थे, जिनमें पुष्पदंत, चित्रसेन तथा उसका पुत्र - ये तीन प्रधान थे। चित्रसेन की स्त्री का नाम मालिनी था। मालिनी से एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जो पुष्पवंती के नाम से विख्यात थी। पुष्पदंत गंधर्व को एक पुत्र था, जिसको लोग माल्यवान कहते थे। माल्यवान पुष्पवंती के रूप पर अत्यंत मोहित था। ये दोनों भी इन्द्र के संतोषार्थ नृत्य करने के लिए आये

थे। इन दोनों का गान हो रहा था। इनके साथ अप्सराएँ भी थीं। परस्पर अनुराग के कारण ये दोनों मोह के वशीभूत हो गये। चित्त में भ्रांति आ गयी इसलिए वे शुद्ध गान न गा सके। कभी ताल भंग हो जाता था तो कभी गीत बंद हो जाता था। इन्द्र ने इस प्रमाद पर विचार किया और इसे अपना अपमान समझकर वे कुपित हो गये।

अतः इन दोनों को शाप देते हुए बोले : 'ओ मूर्खो ! तुम दोनों को धिक्कार है ! तुम लोग पतित और मेरी आज्ञा भंग करनेवाले हो, अतः पति-पत्नी के रूप में रहते हुए पिशाच हो जाओ।'

इन्द्र के इस प्रकार शाप देने पर इन दोनों के मन में बड़ा दुःख हुआ। वे हिमालय पर्वत पर चले गये और पिशाच-योनि को पाकर भयंकर दुःख भोगने लगे। शारीरिक पातक से उत्पन्न ताप से पीड़ित होकर दोनों ही पर्वत की कंदराओं में विचरते रहते थे। एक दिन पिशाच ने अपनी पत्नी पिशाची से कहा : 'हमने कौन-सा पाप किया है, जिससे यह पिशाच-योनि प्राप्त हुई है ? नरक का कष्ट अत्यंत भयंकर है तथा पिशाच-योनि भी बहुत दुःख देनेवाली है। अतः पूर्ण प्रयत्न करके पाप से बचना चाहिए।'

इस प्रकार चिंतामग्न होकर वे दोनों दुःख के कारण सूखते जा रहे थे। दैवयोग से उन्हें माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी की तिथि प्राप्त हो गयी। 'जया' नाम से विख्यात वह तिथि सब तिथियों में उत्तम है। उस दिन उन दोनों ने सब प्रकार के आहार त्याग दिये, जलपान तक नहीं किया। किसी जीव की हिंसा नहीं की, यहाँ तक कि खाने के लिए फल तक नहीं काटा। निरंतर दुःख से युक्त होकर वे एक पीपल के समीप बैठे रहे। सूर्यास्त हो गया। उनके प्राण हर लेनेवाली भयंकर रात्रि उपस्थित हुई। उन्हें नींद नहीं आयी। वे रति या और कोई सुख भी नहीं पा सके।

सूर्योदय हुआ, द्वादशी का दिन आया। इस प्रकार उस पिशाच दम्पति के द्वारा 'जया' के उत्तम व्रत का पालन हो गया। उन्होंने रात में जागरण भी किया था। उस व्रत के प्रभाव से तथा भगवान विष्णु की शक्ति से उन दोनों का पिशाचत्व दूर हो गया। पुष्पवंती और माल्यवान अपने पूर्व रूप में आ गये। उनके हृदय में वही पुराना स्नेह उमड़ रहा था। उनके शरीर पर पहले जैसे ही अलंकार शोभा पा रहे थे।

वे दोनों मनोहर रूप धारण करके विमान पर बैठे और स्वर्गलोक में चले गये। वहाँ देवराज इन्द्र के सामने जाकर दोनों ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उन्हें प्रणाम किया।

उन्हें इस रूप में उपस्थित देखकर इन्द्र को बड़ा विस्मय हुआ। उन्होंने पूछा : 'बताओ, किस पुण्य के प्रभाव से तुम दोनों का पिशाचत्व दूर हुआ है ? तुम मेरे शाप को प्राप्त हो चुके थे, फिर किस देवता ने तुम्हें उससे छुटकारा दिलाया है ?'

माल्यवान बोला : 'स्वामिन् ! भगवान वासुदेव की कृपा तथा 'जया' नामक एकादशी के व्रत से हमारा पिशाचत्व दूर हुआ है।'

इन्द्र ने कहा : '...तो अब तुम दोनों मेरे कहने से सुधापान करो। जो लोग एकादशी के व्रत में तत्पर और भगवान श्रीकृष्ण के शरणागत होते हैं, वे हमारे भी पूजनीय होते हैं।'

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''राजन् ! इस कारण एकादशी का व्रत करना चाहिए। नृपश्रेष्ठ ! 'जया' ब्रह्महत्या का पाप भी दूर करनेवाली है। जिसने 'जया' का व्रत किया है, उसने सब प्रकार के दान दे दिये और सम्पूर्ण यज्ञों का अनुष्ठान कर लिया। इस माहात्म्य के पढ़ने और सुनने से अग्निष्टोम यज्ञ का फल मिलता है।'' ☐

अमूल्य मानव-जीवन की रक्षा

स्त्री-प्रसंग कितनी बार ?

यदि कोई जानबूझकर अपने सामर्थ्य को खोकर श्रीहीन बनना चाहता हो तो वह यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात के इन प्रसिद्ध वचनों को सदैव याद रखे। सुकरात से एक व्यक्ति ने पूछा : ''पुरुष के लिए कितनी बार स्त्री-प्रसंग करना उचित है ?''

''जीवन भर में केवल एक बार।''

''यदि इससे तृप्ति न हो सके तो ?''

''तो वर्ष में एक बार।''

''यदि इससे भी संतोष न हो तो ?''

''फिर महीने में एक बार।''

''इससे भी मन न भरे तो ?''

''तो महीने में दो बार करें परंतु मृत्यु शीघ्र आयेगी।''

''इतने पर भी इच्छा बनी रहे तो क्या करें ?''

''तो ऐसा करें कि घर में दवाइयाँ और कफन लाकर रखें और फिर बीमारियों और मौत को बुलावा देनेवाले काम-विकार में अपना सत्यानाश करें।'' सुकरात के ये वचन सचमुच बड़े प्रेरणाप्रद हैं। वीर्यक्षय के द्वारा जिस-जिसने भी सुख लेने का प्रयास किया है, उन्हें घोर निराशा हाथ लगी है और अंत में श्रीहीन होकर मृत्यु का ग्रास बनना पड़ा है। कामभोग द्वारा कभी तृप्ति नहीं होती, सत्यानाश के सिवाय कुछ नहीं होता और अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ चला जाता है।

राजा ययाति का अनुभव

शुक्राचार्य के शाप से राजा ययाति युवावस्था में ही वृद्ध हो गये थे परंतु बाद में ययाति के प्रार्थना करने पर शुक्राचार्य ने दयावश उनको यह शक्ति दे दी कि वे चाहें तो अपने पुत्रों से युवावस्था लेकर अपना वार्धक्य उन्हें दे सकते हैं। तब ययाति ने अपने पुत्र यदु, तुर्वसु, द्रुह्यु और अनु से उनकी जवानी माँगी, मगर वे राजी न हुए। अंत में छोटे पुत्र पुरु ने पिता को अपना यौवन देकर उनका बुढ़ापा ले लिया।

पुनः युवा होकर ययाति ने फिर से भोग भोगने शुरू किये। एक हजार वर्ष तक भोग भोगने के बाद भी भोगों से जब वे संतुष्ट नहीं हुए तो उन्होंने अपना बचा हुआ यौवन अपने पुत्र पुरु को लौटाते हुए कहा : ''पुत्र ! मैंने तुम्हारी जवानी लेकर अपनी रुचि, उत्साह और समय के अनुसार विषयों का सेवन किया।

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥...

लेकिन विषयों की कामना उनके उपभोग से कभी शांत नहीं होती, अपितु घी की आहुति पड़ने पर अग्नि की भाँति वह अधिकाधिक बढ़ती ही जाती है। इस पृथ्वी पर जितने भी धान, जौ, स्वर्ण, पशु और स्त्रियाँ हैं, वे सब एक मनुष्य के लिए भी पर्याप्त नहीं हैं। अतः तृष्णा का त्याग कर देना चाहिए। खोटी बुद्धिवाले लोगों के लिए जिसका त्याग करना अत्यंत कठिन है, जो मनुष्य के बूढ़े होने पर भी स्वयं बूढ़ी नहीं होती तथा जो एक प्राणांतक रोग है उस तृष्णा को त्याग देनेवाले पुरुष को ही सुख मिलता है।''

(महाभारत – आदिपर्वणि संभवपर्व : ८५.१२-१४)

ययाति का अनुभव वस्तुतः बड़ा मार्मिक व मनुष्य-जाति के लिए हितकारी है। वे आगे कहते हैं :

''पूर्णं वर्षसहस्रं मे विषयासक्तचेतसः।
तथाप्यनुदिनं तृष्णा ममैतेष्वभिजायते ॥...

पुत्र ! देखो, विषयभोग में आसक्तचित्त हुए मेरे एक हजार वर्ष बीत गये तो भी प्रतिदिन उन विषयों के लिए ही तृष्णा पैदा होती है। (हजार वर्ष सुन के आश्चर्य नहीं करना। कई हजार वर्ष की आयु का वर्णन शास्त्रों में आता है।) अतः मैं इस तृष्णा को छोड़कर परब्रह्म परमात्मा में मन लगा द्वन्द्व और ममता से रहित हो वन में मृगों के साथ विचरूँगा।''

अपने पुत्र पुरु को राज्य देकर राजा ययाति ने तपस्या हेतु वनगमन किया।

जो लोग अपने जीवन में वीर्यरक्षा को महत्त्व नहीं देते, वे जरा सोचें कि कहीं वे भी राजा ययाति का तो अनुसरण नहीं कर रहे हैं ? क्या वे भी अपने जीवन को ययाति की तरह नष्ट तो नहीं कर रहे हैं ? यदि कर रहे हों तो जैसे ययाति सावधान हो गये, वैसे आप भी सावधान हो जाओ भैया ! हिम्मत करो। दया करो। हम पर दया न करो तो अपने-आप पर तो दया करो भैया ! हिम्मत करो भैया ! सयाने हो जाओ मेरे प्यारे ! जो हो गया उसकी चिंता न करो। आज से नवजीवन का प्रारम्भ करो। ब्रह्मचर्य-रक्षा के आसन, प्राकृतिक औषधियाँ इत्यादि जानकर, अपनाकर वीर बनो। ॐ... ॐ... ॐ...

राजा मुचुकुन्द का प्रसंग

राजा मुचुकुन्द ने गर्गाचार्य के दर्शन-सत्संग के फलस्वरूप भगवान के दर्शन पाये। भगवान की स्तुति करके उन्होंने कहा : ''प्रभो ! मुझे आपकी दृढ़ भक्ति दो।''

तब भगवान बोले : ''तूने जवानी में खूब भोग भोगे हैं, विकारों में खूब डूबा है। विकारी जीवन जीनेवाले को दृढ़ भक्ति नहीं मिलती। मुचुकुन्द ! दृढ़ भक्ति के लिए जीवन में संयम बहुत जरूरी है। तेरा यह क्षत्रिय शरीर समाप्त होगा तब दूसरे जन्म में तुझे दृढ़ भक्ति प्राप्त होगी।'' वही राजा मुचुकुन्द दूसरे जन्म में नरसिंह मेहता हुए। ❒

संस्मरणीय उद्गार

धरती तो बापूजी जैसे संतों के कारण टिकी है

''पूज्य बापूजी जैसे संतों का प्रेम व आशीर्वाद कभी देश, जाति और सम्प्रदाय की सीमाओं में नहीं बँधता। कलियुग में हृदय की निष्कपटता, निःस्वार्थ प्रेम, त्याग और तपस्या का क्षय होने लगा है, फिर भी धरती टिकी है तो बापूजी ! इसलिए कि आप जैसे संत भारतभूमि पर विचरण करते हैं। बापूजी की कथा में ही मैंने यह विशेषता देखी है कि गरीब और अमीर, दोनों को अमृत के घूँट एक जैसे पीने को मिलते हैं। यहाँ कोई भेदभाव नहीं है।''

– सुश्री उमा भारती, तत्कालीन मुख्यमंत्री, म.प्र.।

इतनी मधुर वाणी ! इतना अद्भुत ज्ञान !

''मैं अपनी ओर से तथा यहाँ उपस्थित सभी महानुभावों की ओर से परम श्रद्धेय संतशिरोमणि बापूजी का हार्दिक स्वागत करता हूँ। मैंने कई बार टी.वी. पर आपको देखा-सुना है और दिल्ली में एक बार आपका प्रवचन भी सुना है। इतनी मधुर वाणी ! इतना अद्भुत ज्ञान... अगर आपके प्रवचन पर गहराई से विचार करके अमल किया जाय तो इन्सान को जिंदगी में सही रास्ता मिल सकता है। वे लोग धनभागी हैं जो इस युग में ऐसे महापुरुष के दर्शन व सत्संग से अपने जीवन-सुमन खिलाते हैं।''

– श्री भजनलाल, तत्कालीन मुख्यमंत्री, हरियाणा।

सत्संग-श्रवण से मेरे हृदय की सफाई हो गयी

''श्मशानभूमि से आने के बाद हम लोग शरीर की शुद्धि के लिए स्नान कर लेते हैं। ऐसे ही विदेशों में जाने के कारण मुझ पर दूषित परमाणु लग गये थे परंतु वहाँ से लौटने के बाद यह मेरा परम सौभाग्य है कि आज महाराजश्री (पूज्य बापूजी) के दर्शन व पावन सत्संग-श्रवण करने से मेरे चित्त की सफाई हो गयी। विदेशों में रह रहे अनेकों भारतवासी भी पूज्य बापूजी के प्रवचनों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सुन रहे हैं।''

– श्री सूरजभान, तत्कालीन राज्यपाल (उ.प्र., हि.प्र. व बिहार)।

मन एक कल्पवृक्ष

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

कोई सुप्रसिद्ध वैद्यराज थे । रात्रि को किसी बूढ़े आदमी की तबीयत गम्भीर होने पर उन्हें बुलाया गया । वैद्यराज ने देखा कि 'बूढ़ा है, पका हुआ पत्ता है, पुराना अस्थमा है, फेफड़े इन्कार कर चुके हैं, रक्तवाहिनियाँ भी चौड़ी हो गयी हैं, पुर्जे सब पूरे घिस गये हैं । अब बूढ़े का बचना असम्भव है, बहुत-बहुत तो ४० से ४८ घंटे निकाल सकता है ।' वैद्य ने ठीक से जाँच की । बड़ा सात्त्विक वैद्य था, अच्छी परख थी उसकी ।

बूढ़े ने कहा : ''बताओ मेरा क्या होगा ? कोई दवाई लगती नहीं, दो साल से पड़ा हूँ बिस्तर पर, ऐसा है-वैसा है... ।''

वैद्य ने कहा : ''चिंता न करो । मैं जाता हूँ, जाँच-पड़ताल करके चिट्ठी भेजता हूँ और दवाई भी भेजता हूँ ।''

वैद्य अपने घर की ओर लौटा । रास्ते में याद आया कि 'धनी सेठ का एक लड़का जो बीमार है, दवाइयाँ मँगा रहा था, जरा उसे देखता जाऊँ ।'

वैद्य ने उस युवक को देखा । युवक भी बिस्तर पर कराह रहा था कि ''मेरी तबीयत खराब है, कमजोरी है, मेरे को ऐसा है-वैसा है... । क्या पता कब ठीक होऊँगा ?''

वैद्य ने कहा : ''चिंता की बात नहीं है, ठीक हो जाओगे । तुमको बीमारी का वहम ज्यादा है, वहम निकाल दो ।''

बोले : ''मुझे रोग क्या है यह तो बताओ वैद्यराज ?''

वैद्यराज ने कहा : ''मैं अभी जाता हूँ, अपने औषधालय से पूरा विश्लेषण करके तुमको चिट्ठी भी भेजता हूँ, दवाई भी भेजता हूँ ।''

वैद्य ने दो चिट्ठियाँ लिखीं और दोनों की दवाइयाँ साथ में भेज दीं । अब जो चिट्ठी और दवाई जवान को देनी थी वह बूढ़े के पास पहुँच गयी और जो बूढ़े को देनी थी वह गलती से जवान को मिल गयी । उस चिट्ठी में बूढ़े के लिए लिखा था : 'शरीर का कोई भरोसा नहीं । पद का भी कोई भरोसा नहीं । शरीर का ही भरोसा नहीं तो पदों का भरोसा कैसे ! सारे पद शरीर पर आधारित हैं । जितना हो सके हरि-स्मरण करो और अपनी धन-सम्पत्ति बच्चों के हवाले करने के लिए तुम्हारे अंदर थोड़ी शक्ति आ जाय, ऐसी उत्तेजक दवा भेजता हूँ । परमात्मा का खूब सुमिरन करो, शरीर तो किसीका सदा रहा नहीं ! भगवान हरि ही तुम्हारी शरण हैं, अंतिम गति हैं । संसार में अब तुम्हारे ज्यादा दिन नहीं हैं । एक-दो दिन के तुम मेहमान हो ।'

जवान ने ज्यों चिट्ठी पढ़ी महाराज ! ऐसा ढला कि फिर उठ न सका । करवट बदलने के लिए पत्नी को बुलाता । रात भर चीखा-चिल्लाया । सुबह होते-होते आदमी वैद्यराज को बुलाने गये : ''हालत गम्भीर है, चलो ।''

वैद्य ने कहा : ''गम्भीर-वम्भीर कुछ नहीं, अब मेरे आने की कोई जरूरत नहीं । मैं कल देखकर आया हूँ । अभी मेरे पूजा-पाठ का समय है ।''

नौकर ने जाकर कहा : ''वैद्य बोलते हैं कि अब मेरे आने की जरूरत नहीं है ।'' जवान को लगा कि 'सचमुच अब मैं जानेवाला हूँ, वैद्य आकर क्या करेगा !' उसकी तबीयत और खराब हो गयी । दोपहर तक उसकी ऐसी हालत हो गयी कि जैसे अब गया... अब गया... । वैद्य के मन में हुआ कि 'आदमी पर आदमी आ रहे हैं । चलो, जरा

देखकर आयें ।'

वैद्यराज ने उस युवक को देखा और बोले : ''कल तक तो इस जवान की हालत ठीक-ठीक थी, अब ऐसी कैसे हो गयी ! क्या हो गया ?''

वह बोला : ''आप ही ने तो कहा कि 'तुम एक-दो दिन के मेहमान हो ।' रात को आपकी चिट्ठी पढ़ने से तो मेरी तबीयत और खराब हो गयी और मुझे तो सामने मृत्यु ही दिखती है कि मैं मर जाऊँगा । वैद्यराज ! मैंने अपने कुटुम्बियों को, ससुरालवालों को तार भेज दिये । मैं तुम्हारे पैर पकड़ता हूँ, वचन देता हूँ, मैं लिखकर दे दूँ कि मेरी धन-सम्पदा सब आपको अर्पण करता हूँ । मुझे ठीक कर दो, मुझे जीवन दे दो... ।''

वह युवक 'अब मरा ! अब मरा !' - इस प्रकार का विलाप कर रहा था । वैद्य ने चिट्ठी माँगी कि इतना कैसे लड़खड़ा गया ! पढ़ी तो खूब हँसा । बोला : ''अरे ! यह तो कल मैं जिस बूढ़े को देखकर आया था, उसकी चिट्ठी है और यह उत्तेजक दवा उसके लिए है । तेरे को तो थोड़ा-सा बुखार है, तेरी दवा अलग है । उस आदमी ने बेवकूफी की जो तेरे को दे दी । मुझसे गलती हो गयी, अब ऐसे आदमियों के द्वारा चिट्ठी नहीं भिजवाऊँगा ।''

वैद्य ने कुछ विश्वास की बातें सुनायीं तो वह उठ के खड़ा हो गया । बोला : ''अच्छा, ऐसी बात है !'' वैद्य ने कहा : ''हाँ, हाँ सचमुच !'' वह खाना-वाना खाकर बोलता है : ''अच्छा चलो, बूढ़े का हाल देखकर आयें । उसका क्या हुआ ?'' वे दोनों उस बूढ़े के पास गये । वैद्य ने देखा कि इसका बिस्तर तो पहली मंजिल पर रहता था, यह अब नीचे कैसे आ गया ! जो अभी मरीज था, मर रहा था, पलंग पर से करवट बदलने के लिए जिसे स्त्री के सहयोग की जरूरत थी, देखा तो वह रसोई में रोटी और दूध खा रहा है । वैद्य को देखकर बूढ़ा बोल उठा : ''मेरे वैद्यराज भगवान ! तुम्हारा भला हो । तुम्हारी दवा में तो क्या चमक थी ! तुम्हारी चिट्ठी पढ़ी कि 'कोई खास रोग नहीं, जरा कमजोरी है । तुम तो बिना मतलब के वहम में फँसे हो ।' सचमुच, मैंने वहम छोड़ दिया और मुझमें शक्ति आ गयी । मैं गद्दे से उतरकर खाने आ गया हूँ लो !''

वह जवान बोलने ही जा रहा था कि 'भाई ! वह तो मेरी चिट्ठी है ।' कि वैद्यराज ने उसको संकेत कर दिया कि 'चुप रहो अब ! इधर तो काम बन गया !' बूढ़ा बोला : ''वैद्यराज ! दो साल से तो मैं दवाइयाँ कर रहा था । ऐसे लल्लू-पंजू वैद्यों के चक्कर में था कि बीमार-ही-बीमार रहा । तुम्हारे जैसे वैद्य की दवा पहले करता तो दो साल मुझे बिस्तर पर नहीं पड़े रहना पड़ता । वैद्यराज ! तुम्हारा मंगल हो, खूब जियो !''

वैद्य के वचन से जो बिस्तर पर था, वह व्यक्ति तीन महीने और जिया । ऐसे कई दृष्टांत तुमने समाज में देखे होंगे ।

और एक्स-रे करके लुटेरे डॉक्टर कितना तुम्हें नोच लेते हैं और कितना तुम्हें गहरा मरीज बना देते हैं ! यह है, वह है... एक्स-रे के काले पन्ने दिखाकर तुम्हें और तुम्हारे कुटुम्बियों को डरा के अपनी काली मुरादें पूरी कर लेते हैं ।

दया बहन शेवानी का पुत्र, पति और दया बहन स्वयं थकी-हारी थीं । लगता था कि अब जानेवाली हैं । वे लोग हमारे पास आये और अभी भी दया बहन जीवित हैं ।

श्रीमती दया बहन, प्रह्लाद शेवानी और परिवार चकित हो रहा है कि 'मृत्यु के मुख से बापू बाहर ले आये !' मृत्यु के मुख से बाहर नहीं लाये, जिन्होंने लूटने के लिए धकेला था और जिन्हें ऑपरेशन करना था, उन शिकारियों के शिकंजे से बापू उनको बाहर ले आये और आश्रम के वैद्यों ने निष्काम भाव से थोड़ा इलाज किया । डॉक्टरों की अंग्रेजी औषधियों से सब बाल झड़ रहे थे, मुंडित-तुंदित लग रही थी । अब तो उन्हें नये काले बाल भी उभर रहे हैं । यह देखकर तो

उनकी बहूरानी भी दंग रह गयी !

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम - ये छः सद्गुण जहाँ रहते हैं, वहाँ परमात्मा पग-पग पर अपनी करुणा-कृपा छलकाते हैं, छलकाते हैं, इसमें संदेह नहीं है ।

जो डॉक्टर लापरवाही बरतते हैं या मरीज को डराते हैं और उनको लूटने का इरादा बनाते हैं, भगवान उनको सद्बुद्धि दें । वे सुधर जायें, सुधरने का सीजन है ।

तुम्हारे गहरे मन में इतना सामर्थ्य है कि ढले हुए शरीर को जीवन दे सकता है और जीवनवाले शरीर को ढला सकता है । तुम मन में जैसा दृढ़ संकल्प करो, वैसा होने लगता है ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः ।

मन ही तुम्हारे बंधन और मुक्ति का कारण है । जैसा-जैसा आदमी सोचता है न, वैसा-वैसा बन जाता है । जो नकारात्मक सोचता है, घृणात्मक सोचता है उसको घृणा ही मिलती है और नकारा जाता है । जो वाह-वाह सोचता है, धन्यवाद सोचता है, 'कर लूँगा, हो जायेगा... हो जायेगा' - ऐसा सोचता है, निराशा-हताशा की बातें नहीं सोचता उसके काम हो जाते हैं । ❑

(पृष्ठ ११ से 'वेलेन्टाईन डे नहीं मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायें का शेष)

मूर्ख बन जाता है ।

यह प्रेम-दिन नहीं, युवक-युवतियों के साथ घोर जुल्म का दिन है, 'युवाधन विनाश डे' है । उन अनजानों को नहीं पता है लेकिन डॉक्टर, वैद्य और बुद्धिमान समझ सकते हैं कि युवक-युवतियाँ एक-दूसरे को फूल देंगे, एक-दूसरे के शरीर को स्पर्श करेंगे तो सेक्सुअल केन्द्र की ऊर्जा नष्ट होगी या ऊर्ध्वगमन करेगी ?

माता-पिता का पूजन करते हैं तो काम राम में बदलेगा, अहंकार प्रेम में बदलेगा, माता-पिता के आशीर्वाद से बच्चों का मंगल होगा । ❑

आत्म-कल्याण में विलम्ब क्यों ?

(पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी)

किसी भी कर्म का फल शाश्वत नहीं है । पुण्य का फल भी शाश्वत नहीं और पाप का फल भी शाश्वत नहीं । केवल ज्ञान का फल, परमात्म-साक्षात्कार का फल ही शाश्वत है, दूसरा कुछ शाश्वत नहीं है ।

पुण्य का फल सुख भोगकर नष्ट हो जाता है । पाप का फल दुःख भोगने से नष्ट हो जाता है । इसीलिए शास्त्रकारों ने कहा : ''पुण्य का फल ईश्वर को समर्पित करने से हृदय शुद्ध होता है । शुद्ध हृदय में शुद्ध स्वरूप को पाने की जिज्ञासा जगती है । शुद्ध स्वरूप को पाने की जिज्ञासा जगती है तब वेदांत के वचन पचते हैं ।'' किसी व्यक्ति ने कुछ कार्य किया । उसको ज्यों-का-त्यों जाना तो यह सामाजिक सत्य है, परम सत्य नहीं । परम सत्य किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के इर्दगिर्द नहीं रहता । उस सत्य में तो अनंत-अनंत व्यक्ति और ब्रह्माण्ड पैदा हो-होकर लीन हो जाते हैं, फिर भी उस सत्य में एक तिनका भर भी हेर-फेर या कटौती-बढ़ौती नहीं होती । वही परम सत्य है । उस परम सत्य को पाने के लिए ही मनुष्य-जन्म मिला है ।

इस प्रकार का दिव्य ज्ञान पाने का जब तक लक्ष्य नहीं बनता है, तब तक किसी-न-किसी अवस्था में हमारा मन रुक जाता है । किसी-न-

किसी अवस्था में हमारी बुद्धि स्थगित हो जाती है, कुण्ठित हो जाती है।

अवस्था अच्छी या बुरी होती है। जहाँ अच्छाई है वहाँ बुराई भी होगी। जहाँ बुराई है वहाँ अच्छाई की अपेक्षा है। बुरे की अपेक्षा अच्छा, अच्छे की अपेक्षा बुरा। लेकिन अच्छा और बुरा, यह सारा-का-सारा शरीर को, अंतःकरण को, मन को, बुद्धि को 'मैं' मानकर होता है। हकीकत में ये अंतःकरण, मन, बुद्धि 'मैं' हैं नहीं। असली 'मैं' को नहीं जानते इसलिए हर जन्म में नया 'मैं' बनाते हैं। उस नये 'मैं' को सजाते हैं। हर जन्म के इस नये-नये 'मैं' को आखिर जला देते हैं।

जब तक असली 'मैं' की जिज्ञासा नहीं जगी तब तक माने हुए 'मैं' को सँभालकर, सँवारकर, बचा के जीवन घिस डालते हैं हम लोग। माने हुए 'मैं' की कभी वाहवाही होगी तो कभी निंदा होगी। 'मैं' कभी निर्दोष रहेगा, कभी दोषी बनेगा, कभी काम-विकार में गिरेगा, कभी निष्काम होगा। माना हुआ 'मैं' तो उछलता-कूदता, डिमडिमाता, धक्के खाता अंत में श्मशान में खत्म हो जायेगा। फिर नये जन्म का नया 'मैं' सर्जित होगा। ऐसा करते-करते यह प्राणी बेचारा अपने असली 'मैं' के ज्ञान के बिना अनंत जन्मों तक दुःखों के चक्र में घूमता रहता है। इसीलिए गीताकार ने कहा है :

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

'इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करनेवाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।'

(श्रीमद् भगवद्गीता : ४.३८)

जब अपनी असलियत का ज्ञान मिलता है, तब बेड़ा पार होता है। बाकी तो छोटी अवस्थाओं से बड़ी अवस्थाएँ आती हैं। बड़ी अवस्थाओं से और बड़ी अवस्थाएँ आती हैं। इन अवस्थाओं का सुख-दुःख अंतःकरण तक सीमित रहता है।

देह से एक होने पर अवस्था का सुख मिलता है लेकिन सत्य का साक्षात्कार तब होता है, असली सुख तब मिलता है जब देह से एक होना भूलते हैं और परमात्मा से एक होते हैं। शरीर से एक होते हैं तब माया का सुख मिलता है, नश्वर सुख मिलता है और वह सुख शक्ति को क्षीण करता है। परमात्मा से जब एक होकर मिलते हैं, जितनी देर सीमित 'मैं' को भूल जाते हैं, उतनी देर दिव्य सुख की झलकें आती हैं। चाहे भक्ति के द्वारा, चाहे योग के द्वारा अथवा तत्त्व-विचार के द्वारा जब हम सीमित 'मैं' को भूलकर परमात्मा से एक होते हैं, तब परम सुख की झलकें आती हैं। फिर जब सीमित 'मैं' स्मरण में आता है तो आदमी शुद्ध सुख से नीचे आ जाता है।

जीवन में जितने प्रमाण में इन्द्रियगत सुख है, बाहर का आकर्षण है उतने प्रमाण में वह नीचा है, छोटा है। लोगों की नजर में हम चाहे कितने ही ऊँचे दिख जायें लेकिन जितना इन्द्रियगत सुख का आकर्षण है, प्रलोभन है उतना हमारा जीवन पराधीन रहेगा, नीचा रहेगा। जितना-जितना दिव्य सुख की तरफ ज्ञान है, समझ है उतने हम वास्तविक जीवन की ओर होंगे, हमारा जीवन उतना ऊँचा होगा।

ऊँचा जीवन पाना कठिन नहीं है, फिर भी बड़ा कठिन है। हमारी तुच्छ वृत्तियाँ, तुच्छ इच्छाएँ आज तक नहीं गयीं। 'यह हो जाय... वह हो जाय, फिर आराम से भजन करूँगा। ...इतना हो जाय, फिर भजन करूँगा।' आप जानते नहीं कि भजन से ज्यादा आप संसार को मूल्य दे रहे हैं। भजन का मूल्य आपने जाना नहीं। 'इतना पाकर फिर पिया को पाऊँगा' - तो पिया को पाने की महत्ता आपने जानी नहीं। क्यों नहीं जानी ? क्योंकि मिटनेवाले शरीर की महत्ता आ गयी बीच में।

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'जीवन विकास' से क्रमशः) ❑
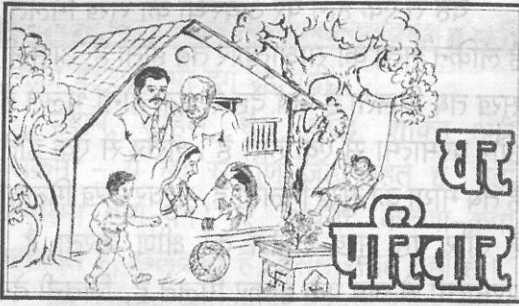
परलोक के भोजन का स्वाद

एक सेठ ने अन्नसत्र खोल रखा था। उनमें दान की भावना तो कम थी पर समाज उन्हें दानवीर समझकर उनकी प्रशंसा करे यह भावना मुख्य थी। उनके प्रशंसक भी कम नहीं थे। थोक का व्यापार था उनका। वर्ष के अंत में अन्न के कोठारों में जो सड़ा-गला अन्न बिकने से बच जाता था, वह अन्नसत्र के लिए भेज दिया जाता था। प्रायः सड़ी ज्वार की रोटी ही सेठ के अन्नसत्र में भूखों को प्राप्त होती थी।

सेठ के पुत्र का विवाह हुआ। पुत्रवधू घर आयी। वह बड़ी सुशील, धर्मज्ञ और विचारशील थी। उसे जब पता चला कि उसके ससुर द्वारा खोले गये अन्नसत्र में सड़ी ज्वार की रोटी दी जाती है तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने भोजन बनाने की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। पहले ही दिन उसने अन्नसत्र से सड़ी ज्वार का आटा मँगवाकर एक रोटी बनायी और सेठ जब भोजन करने बैठे तो उनकी थाली में भोजन के साथ वह रोटी भी परोस दी। काली, मोटी रोटी देखकर कौतूहलवश सेठ ने पहला ग्रास उसी रोटी का मुख में डाला। ग्रास मुँह में जाते ही वे थू-थू करने लगे और थूकते हुए बोले : ''बेटी ! घर में आटा तो बहुत है। यह तूने रोटी बनाने के लिए सड़ी ज्वार का आटा कहाँ से मँगाया ?''

पुत्रवधू बोली : ''पिताजी ! यह आटा परलोक से मँगाया है।''

ससुर बोले : ''बेटी ! मैं कुछ समझा नहीं।''

''पिताजी ! जो दान-पुण्य हमने पिछले जन्म में किया वही कमाई अब खा रहे हैं और जो हम इस जन्म में करेंगे वही हमें परलोक में मिलेगा। हमारे अन्नसत्र में इसी आटे की रोटी गरीबों को दी जाती है। परलोक में हमें केवल इसी आटे की रोटी पर रहना है। इसलिए मैंने सोचा कि अभी से हमें इसे खाने का अभ्यास हो जाय तो वहाँ कष्ट कम होगा।''

सेठ को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने अपनी पुत्रवधू से क्षमा माँगी और अन्नसत्र का सड़ा आटा उसी दिन फिंकवा दिया। तब से अन्नसत्र में गरीबों, भूखों को अच्छे आटे की रोटी मिलने लगी।

आप दान तो करो लेकिन दान ऐसा हो कि जिससे दूसरे का मंगल-ही-मंगल हो। जितना आप मंगल की भावना से दान करते हो उतना दान लेनेवाले का तो भला होता ही है, साथ में आपका भी इहलोक और परलोक सुधर जाता है। दान करते समय यह भावना नहीं होनी चाहिए कि लोग मेरी प्रशंसा करें, वाहवाही करें। दान इतना गुप्त हो कि देते समय आपके दूसरे हाथ को भी पता न चले।

रहीम एक नवाब थे। वे प्रतिदिन दान दिया करते थे। उनका दान देने का ढंग अनोखा था। वे रुपये-पैसों की ढेरी लगवा लेते थे और आँखें नीची करके उस ढेर में से मुट्ठी भर-भरकर याचकों को देते जाते थे। एक दिन संत तुलसीदासजी भी वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने देखा कि एक याचक दो-तीन बार ले चुका है परंतु रहीम फिर भी उसे दे रहे हैं ! यह दृश्य देखकर तुलसीदासजी ने पूछा :

सीखे कहाँ नवाबजू देनी ऐसी देन ?
ज्यों ज्यों कर ऊँचे चढ़े त्यों त्यों नीचे नैन ॥

तब रहीम ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया :

देने हारा और है, जो देता दिन रैन ।
लोग भरम हम पै करें, या विधि नीचे नैन ॥

असल में दाता तो कोई दूसरा है, जो दिन-रात दे रहा है, हम पर व्यर्थ ही भ्रम होता है कि हम दाता हैं, इसीलिए आँखें झुक जाती हैं।

कितनी ऊँची दृष्टि है ! कितना पवित्र दान है ! दान श्रद्धा, प्रेम, सहानुभूति एवं नम्रतापूर्वक दो; कुढ़कर, जलकर, खीजकर मत दो। अहं सजाने की गलती नहीं करो, अहं को विसर्जित करके विशेष नम्रता से सामनेवाले के अंतरात्मा का आशीष पाओ।

'स्वामी नित्यानंद प्रकरण के पीछे क्रिश्चियन मिशनरी' - रंजीता

प्रसिद्ध इतिहासकार पीतीरीम सोरोकीन ने लिखा है : ''पिछली कुछ शताब्दियों में सबसे आक्रामक, लड़ाकू, लालची और सत्ता-मद में चूर यदि मानव-समाज में कोई अंग है तो वह है ईसाई मिशनरियाँ ! अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और रशिया के करोड़ों भोले आदिवासियों को इस विचित्र ब्रांड ईसाई मानव-प्रेम के अधीन बनाकर उनका अत्यंत निर्दयता से खात्मा किया गया । उनकी संस्कृति, चरित्र, जीवन-पद्धति, जीवन-मूल्य और संस्थाएँ नष्ट-भ्रष्ट कर दी गयीं ताकि उन्हें ईसाई बनाया जा सके ।'' आज स्वतंत्रता पाने के बाद भी भारत के भोलेभाले लोग उन मिशनरियों की दुष्प्रवृत्तियों के शिकार हो रहे हैं ।

धर्मान्तरण के लिए उन्होंने सन् १९८९ में १४५ अरब डॉलर खर्च किये और लाखों डॉलर वे भारत में धर्मान्तरण के लिए भेजते हैं। जिससे मीडिया और राजनेताओं को खरीदकर वे हिन्दुओं की धार्मिक आस्था को हिलाने के लिए षड्यंत्रों के द्वारा हिन्दू देवी-देवताओं, हिन्दू संतों और महापुरुषों को बदनाम करते रहते हैं। इनके द्वारा वे हिन्दुओं का धर्मान्तरण आसान बनाना चाहते हैं।

जिस प्रकार कांची के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती और उड़ीसा के श्री लक्ष्मणानंद सरस्वती धर्म-परिवर्तन और ईसाई एवेंजेलिस्टों के खिलाफ मुहिम चलाते थे, ठीक वैसे ही नित्यानंद भी धर्म-परिवर्तन की राह में रोड़ा बने हुए थे। अतः मीडिया, जो मार्क्स, मुल्ला, मिशनरियों, मैकाले और मार्केट को बिका हुआ है, उसने अपने आकाओं के आदेश का पालन करते हुए नित्यानंद के चरित्र को कलंकित करने के लिए फर्जी सी.डी. बनाकर एक घिनौना प्रयास किया, जिसका आखिर भंडाफोड़ हो ही गया।

स्वामी नित्यानंद के साथ कथित अश्लील हरकतोंवाले विडियो से सुर्खियों में आयी तमिल अभिनेत्री रंजीता ने उनके साथ यौन-संबंध होने से इन्कार करते हुए टी.वी. चैनलों पर दिखाई गयी फुटेज को फर्जी करार दिया है ।

एक प्रेस-वार्ता में रंजीता ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों को नकार दिया। उसने कहा : 'मुझे धमकाया गया था, ब्लैकमेल किया गया था। फरार होने के लिए मुझ पर दबाव दिया गया था। इससे मैं डर गयी थी। मैंने मजिस्ट्रेट के कोर्ट में फरियाद दर्ज की है। मैं किसीका सामना करने से डर गयी थी, इसलिए देश से बाहर निकल गयी थी।' इसके बाद बहुत बड़ा रहस्योद्घाटन करते हुए उसने कहा : 'इस साजिश के पीछे क्रिश्चियन मिशनरी का हाथ है।'

रंजीता ने कहा : 'मुझे अपराधियों द्वारा तथा क्रिश्चियन मिशनरी से जुड़े एक व्यक्ति द्वारा धमकाया तथा ब्लैकमेल किया गया था। मैं जीना चाहती हूँ, इसलिए मैं उनके नाम नहीं बताऊँगी। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री मेरी सुरक्षा का वचन देते हैं तो मैं उनके नाम जाहिर कर दूँगी।'

पता चला है कि पुलिस को सी.डी. देकर आरोप लगानेवाला व्यक्ति 'कुरुप्पन लेनिन' एक धर्म-परिवर्तित ईसाई है और यह व्यक्ति पहले एक फिल्म स्टूडियो में काम कर चुका है तथा 'विडियो मॉर्फिंग' (चित्रों को सम्पादित (Edit) करने की एक तकनीक) में एक्सपर्ट है।

अधिकांश भारतीय मीडिया पाश्चात्य मिशनरियों के द्वारा चलाये जाते हैं, अतः उनसे तटस्थता की अपेक्षा करना व्यर्थ है । यदि वे मिशनरियों की कठपुतलियाँ न होते तो वेटिकन और अन्य पश्चिमी देशों में चर्च की आड़ में चल रहे यौन-शोषण के हजारों मामलों को अखबारों और चैनलों के द्वारा अवश्य प्रकाशित करते। पाश्चात्य मीडिया इस विषय में तटस्थता के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने इन अपराधियों का और उनके धर्मगुरु पोप का भी विरोध किया। पादरियों के द्वारा किये गये यौन-शोषण के अपराधों के लिए वर्तमान पोप बेनेडिक्ट को क्षमा-याचना करनी पड़ी।

✻ सन् १९५० से २००२ तक के काल में

पादरियों के द्वारा किये गये यौन-शोषण के करीब १०,६६७ अपराध दर्ज किये गये। उनमें से ३३०० की जाँच पूरी होने के पहले वे मर गये। बाकी में से ६७०० पादरियों को अपराधी घोषित किया गया। उनमें ४३९२ तो अमेरिका के पादरी हैं, जो कुल अमेरिकन पादरियों के ४% हैं।

✻ सन् २००२ में चर्च ने आयरलैंड के पादरियों के यौन-शोषण के अपराधों के कारण १२,८०,००,००० डॉलर का दंड चुकाया।

✻ अमेरिका में ही चर्च ने अब तक २ अरब से ज्यादा डॉलर पादरियों के द्वारा यौन-शोषण का भोग बने हुए लोगों को मुआवजे के रूप में चुकाये हैं। मई २००९ में प्रकाशित 'रायन रिपोर्ट' ने ९ वर्ष के अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि ३०,००० बच्चों को इन संस्थाओं में ईसाई साध्वियों और पादरियों के द्वारा प्रताड़ित किया जाता था और उनका शोषण किया जाता था। हजारों लड़कों और लड़कियों को कैथोलिक पादरियों और ननों के आतंक का शिकार होना पड़ा और सरकारी अमलदार उनकी रक्षा न कर सके। अमेरिका, कनाडा, आयरलैंड, इंग्लैंड, मेक्सिको, बेल्जियम, फ्रांस, जर्मनी - समस्त विश्व में ईसाई मिशनरियों के द्वारा ऐसे जघन्य अपराध किये जाते हैं। फिर भी जिनकी नजर उस पर नहीं जाती और निर्दोष संतों को अपराधी सिद्ध करने के षड्यंत्र रचते रहते हैं, वे मीडियाकर्मी मिशनरियों की कठपुतलियाँ हैं। और धन्य हैं वे पाश्चात्य मीडियाकर्मी, जो ऐसे अपराधियों का वास्तविक चेहरा समाज के सामने प्रकट करते हैं।

मिशनरी शायद दूसरे धर्मों के निर्दोष महापुरुषों को पापी सिद्ध करके अपने पाप छुपाना चाहते हैं लेकिन इससे उनके पाप कम नहीं होते, बढ़ते हैं और उनकी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा कलंकित होती है।

धर्मान्तरण किसी धर्म-विशेष की ही समस्या है ऐसी बात नहीं है, यह एक राष्ट्रीय समस्या है।

'अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ वैदिक स्टडीज' के निदेशक डेविड फ्रॉली ने लिखा है : ''स्वतंत्रता के बाद एक ओर हिन्दू-विरोधी प्रचार तथा दूसरी ओर साम्यवाद, इसलाम व ईसाई धर्म के प्रचार द्वारा भारत को टुकड़े-टुकड़े करने की साजिश ने इस देश की समस्याओं को काफी बढ़ाया है। तथाकथित उदार धर्मनिरपेक्ष वे हैं, जो भ्रष्ट राजनीतिज्ञ हैं। वे अपनी कुर्सी तथा सत्ता के लालच में भारतीय हिन्दू-समाज को जातिवाद एवं धर्म के नाम पर अपने वोट बैंक को बढ़ाने के लिए बरगलाते हैं व आपस में द्वेष फैलाकर स्वार्थ सिद्ध करते हैं।'' **(उत्तिष्ठ कौन्तेय, पृष्ठ क्र. १३)**

उनके इशारों पर नाचनेवाले मीडिया का सामूहिक बहिष्कार करें। उनके अन्यायपूर्ण समाचारों का खंडन करें और विरोध प्रदर्शित करें।

वैदिक संस्कृति में ही भगवान का अवतार और अद्वैत ज्ञान है। दूसरी संस्कृतियों में, मजहबों में भगवान का अवतार और भगवान का अद्वैत ज्ञान नहीं है। जिसमें अद्वैत ज्ञान और भगवान का अवतार है और जो मानवमात्र के लिए हितकारी है, ऐसी संस्कृति को तोड़ने में सीधे-अनसीधे जिनका हाथ है, उन मानवता के द्रोहियों से बचें। देशद्रोही, मानवता के द्रोहियों से संगठित होकर सावधानीपूर्वक लोहा लेना होगा। देश और मानवता की रक्षा करना हम सभीका कर्तव्य है।

तत्त्वज्ञान, जिसे वैदिक ज्ञान कहते हैं, जिसे वेदांत ज्ञान भी कहते हैं, सूफीवाद भी कहते हैं और ब्रह्मज्ञान भी कहते हैं, आत्मज्ञान भी कहते हैं और जिसे आत्मविश्रांति-योग भी कहा जाता है, इसी आत्मज्ञान में देश का और विश्वमानव का मंगल छिपा है। और वैदिक शास्त्रों ने तो एकदम स्पष्ट कर दिया है कि **आत्मलाभात् न परं विद्यते।** 'आत्मलाभ से बढ़कर कोई लाभ नहीं है।' ऐसी संस्कृति का प्रचार करना हमारा कर्तव्य है। इसका महत्त्व समझना और समझाना, इसमें मानवता का मंगल है। हिन्दुओं को स्वार्थ एवं संकीर्णता छोड़ हिन्दू-हित के लिए कार्यरत संस्थाओं की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देकर अपना धार्मिक कर्तव्य निभाना चाहिए। **धर्मो रक्षति रक्षितः।**

[**स्रोत : www.dnaindia.com तथा दैनिक समाचार पत्र-हिन्द सहारा, क़मर एक्सप्रेस एवं सांध्य लक्ष्मी भाग्योदय (दिल्ली)।**]

'ऋषि प्रसाद' की सेवा ने भाग्य बदल दिया

श्री सद्गुरु भगवान पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

मैं छिंदवाड़ा जिले के आदिवासी अंचल अमरवाड़ा का रहनेवाला हूँ। मैंने पूज्य बापूजी से १९९७ में दीक्षा ली थी। मैं एक साधारण किसान हूँ। मैं ग्राम पंचायत में सचिव के पद पर कार्य करता था और छिन्दवाड़ा आश्रम में दर्शन हेतु जाता था। वहाँ सन् २००० में मुझे **'ऋषि प्रसाद'** की सेवा करने का सौभाग्य मिला। मैंने गुरुदेव के इस दिव्य ज्ञान **'ऋषि प्रसाद'** को घर-घर पहुँचाने का संकल्प लिया और सेवा में तत्परता से लग गया। शुरू में मुझे २५ सदस्य बनाना भी कठिन लग रहा था क्योंकि यह पूरा आदिवासी क्षेत्र है, फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी। पूज्य गुरुदेव की ऐसी कृपा बरसी कि २५-५० तो क्या २००० से भी ज्यादा सदस्य बना चुका हूँ।

एक बार मेरे ऊपर किसीने झूठा मुकदमा कर दिया। मैंने हिम्मत नहीं हारी, पहले की तरह अपनी सेवा में लगा रहा। मैंने आश्रम जाकर बड़दादा की परिक्रमा की, पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना की और पूज्य गुरुदेव के सत्संग में मुझे मुकदमा जीतने की युक्ति मिल गयी। 'ऋषि प्रसाद' की सेवा और सत्संग के प्रताप से मैं मुकदमा जीत गया।

मेरा राजनीति से कोई संबंध नहीं था। मैं तो केवल बापूजी का सेवक हूँ और उनकी **'ऋषि प्रसाद'** की सेवा करता था लेकिन एक दिन गुरुदेव की मुझ पर ऐसी कृपा बरसी कि जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। जिस पद को पाने के लिए बड़े-बड़े राजनेता प्रयासरत थे, उस पर गुरुदेव ने मुझे सहज में पहुँचा दिया। बिना चुनाव लड़े मुझे राज्यमंत्री का दर्जा दिला दिया। २६ अप्रैल २००८ को बापूजी की कृपा से मुझे समाजसेवा करने का यह सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के पिछले कार्यकाल में भी इस पद पर था और दूसरे कार्यकाल में कई लोगों का पद-परिवर्तन हुआ पर मैं आज भी पूज्य गुरुदेव की कृपा से इस पद पर रहते हुए समाजसेवा कर रहा हूँ। आज भी मुझे आश्रम से जो भी सेवा करने का अवसर प्राप्त होता है, मैं प्रत्येक सेवा को अपना सौभाग्य समझकर करने का पूरा प्रयास करता हूँ।

पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में यही प्रार्थना है कि 'मुझे इसी प्रकार सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहे। मन में कभी भी अहंकार न आये और पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में श्रद्धा-भक्ति बनी रहे।'

– नारायण सिंह बंजारा
अध्यक्ष (राज्यमंत्री दर्जा)
म.प्र.राज्य विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जाति विकास अभिकरण।
मो.नं. : ९४२४३२४४४९. ❑

अक्ल लड़ाओ, ज्ञान बढ़ाओ

१. भीषण युद्ध महाभारत का जिसने देखा-भाला।
कहो, कौन वह क्षेत्र पास में जिसके बसा अम्बाला ?

२. अल्हड़ यमुना का बहता जल जहाँ पर है हिमानी।
कहो, कौन वह जहाँ गर्म बहता है पानी ?

३. सुविख्यात वह तीर्थ मनोरम,
सागर मग्न रहा करता है।
कहो, कहाँ सागर जब हटता,
दो दिन का मेला भरता है ?

(उत्तर के लिए प्रतीक्षा करें आगामी अंक की)

वसंत ऋतु विशेष

(१८ फरवरी से १९ अप्रैल)

१. आहार में सावधानी :

गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत् ।

'वसंत ऋतु में पचने में भारी, खट्टे, स्निग्ध व मधुर पदार्थों का सेवन व दिन में शयन नहीं करना चाहिए।' **(चरक संहिता, सूत्रस्थानम् : ६.२३)**

वसंत में कफ बढ़ जाता है व जठराग्नि मंद हो जाती है, इसलिए खोया (मावा), मिठाई, बलवर्धक पाक, सूखे मेवे, दही, खट्टे फल, अधिक तेल व घी वाले पदार्थ; मिश्री, चीनी, गुड़ व उनसे बने पदार्थ प्रायः नहीं खाने चाहिए। दिन में सोना भी कफ बढ़ानेवाला है, अतः त्याग दें।

इन दिनों में शीघ्र पचनेवाले, अल्प तेल व घी में बने, तीखे, कड़वे, कसैले, उष्ण पदार्थों का सेवन करना चाहिए। अदरक, सोंठ, काली मिर्च, दालचीनी, हींग, मेथी, अजवायन, करेला, बिना बीज के कोमल बैंगन, पुनर्नवा, मूली, सूरन, सहजन, पुराने गेहूँ व जौ, चना आदि हितकर हैं।

२. व्यायाम की विशेषता :

वसंत ऋतु में कफ की अधिकता के कारण शरीर में भारीपन, कठिनता, शीतलता आती है। कभी आलस्य भी आता है, भूख कम लगती है। योगासन, सूर्य-नमस्कार, टहलने, दौड़ने व कसरत करने से शरीर में गर्मी उत्पन्न होती है, जिससे कफ पिघलता है। शरीर में मृदुता, हलकापन व स्फूर्ति आती है और भूख भी खुलकर लगती है। इसलिए कहा गया है :

वसन्ते भ्रमणं पथ्यम् । वसंत ऋतु में खूब पैदल चलना चाहिए।

३. उपवास की आवश्यकता :

लंघनं कफशमनम् ।

उपवास से कफ शांत हो जाता है। वसंत ऋतु में सप्ताह अथवा १५ दिन में एक बार सम्पूर्ण उपवास रखने से कफजन्य रोगों से रक्षा होती है। उपवास के दिन केवल सोंठ डालकर उबाला हुआ पानी पियें।

४. कुछ खास प्रयोग :

✻ २ से ३ ग्राम हरड़ चूर्ण में समभाग शहद मिलाकर सुबह खाली पेट लेने से 'रसायन' के लाभ प्राप्त होते हैं।

✻ श्री चरकाचार्यजी के अनुसार वसंत में सुखोष्ण जल (गुनगुना पानी) पीना चाहिए तथा शरीर पर उबटन लगाना चाहिए। गेहूँ, जौ, चावल, चना, मूँग, उड़द व तिल के समभाग मिश्रण से बना 'सप्तधान्य उबटन' स्वास्थ्यवर्धक व मंगलकारक है।

✻ श्री वाग्भट्टाचार्यजी के अनुसार इन दिनों में नागरमोथ डालकर उबाला हुआ पानी पीना चाहिए।

✻ कफशामक पदार्थों में शहद सर्वोत्कृष्ट है। सुबह गुनगुने पानी में शहद मिलाकर पीना हितावह है।

✻ तुलसी व गोमूत्र का सेवन हितकर है।

✻ भोजन से पूर्व अदरक में सेंधा नमक व नींबू मिलाकर लेना भूखवर्धक है।

✻ गोबर के कंडे जलाकर गूगल का धूप करना, कपूर जलाना, चंदन, कपूर व केसर का तिलक करना, आँखों में अंजन लगाना, नाक व कान में गुनगुना तिल का तेल डालना - ये वसंत ऋतु के स्वास्थ्य-रक्षक विशेष उपक्रम हैं।

✻ नया अनाज कफवर्धक व पचने में भारी होता है, अतः पुराने जौ, गेहूँ, चावल आदि का

उपयोग करें। सेंककर फिर उपयोग में लाने से अनाज पचने में अधिक हलके हो जाते हैं।

✻ ३-४ सूर्यभेदी प्राणायाम करने से व रात को बायीं करवट लेकर सोने से सूर्यनाड़ी सक्रिय होती है, इससे कफ शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

सावधानी : कफ से उत्पन्न होनेवाले रोग दीर्घकाल तक रहनेवाले होते हैं। इसलिए कफ बढ़ते ही उसे तुरंत बाहर निकाल देना चाहिए। इसके लिए गजकरणी, जलनेति का प्रयोग करें (देखें, आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'योगासन' पृ. ४३-४४)। अनुभवी वैद्यों द्वारा वमन-कर्म' करवाना भी हितकर है।

अंग्रेजी दवाइयाँ कफ को शरीर के अंदर ही सुखा देती हैं। ऐसा सूखा एवं दूषित कफ भविष्य में टी.बी., दमा, कैंसर जैसे गम्भीर रोग उत्पन्न कर सकता है, अतः इनसे स्वयं बचें व औरों को बचायें।

अपने हृदय को बनायें सक्षम

मन हृदय के आश्रय से रहता है। मन के भावों का गहरा परिणाम हृदय पर होता है। मानसिक तनाव, चिंता व अति व्यग्रता हृदयरोगों के प्रमुख कारणों में से एक है। चिंता व तनावरहित जीवन का अमोघ उपाय है : ईश्वर-प्रणिधान (ईश्वर-आराधना)।

गुरु व ईश्वर पर जितनी अधिक श्रद्धा, जीवन उतना ही अधिक निश्चिंत व निर्भार होता है। श्रद्धापूर्वक की गयी प्रार्थना मानसिक शांति लाती है। इससे हृदय की नसों में ढीलापन (Relaxation) आता है। ध्यान की गहराइयों में हृदय को बड़ी विश्रांति मिलती है। शवासन व रात्रि-विश्राम से पूर्व प्रार्थना का नियम हृदय को आराम देने में खूब सहायक है।

प्राणवायु का मुख्य स्थान हृदय है। प्राणायाम के नियमित अभ्यास से प्राण-उदान-अपान आदि की गतियाँ नियंत्रित हो जाती हैं। इससे हृदय की क्रियाओं का नियमन होता है। वायु की अनियंत्रित गति हृदयाघात (हार्ट अटैक) का अवश्यम्भावी कारण है।

शुभ चिंतन व सत्कर्म (परहित के लिए किये गये कर्म) से रक्त में एस्पिरिन की मात्रा बढ़ती है, जिससे हृदयस्थ रक्तवाहिनियों में अवरोध (Blockage, Coronary Artery Disease) होने की सम्भावना नहीं रहती।

आयुर्वेदोक्त हृद्य-पदार्थ (Cardic Tonics) जैसे - आम, अनार, कागजी व बिजौरा नींबू, कोकम, आँवला व देशी बेर रक्त का प्रसादन व मन को उल्लसित कर हृदय को सक्षम बनाते हैं। गाय का घी, मक्खन व दूध ओज को बढ़ाकर हृदय का पोषण करते हैं। गेहूँ, खजूर, कटहल, शतावरी, अश्वगंधा हृदय की मांसपेशियों को पुष्ट करते हैं। अर्जुन वृक्ष की छाल व लिंडीपीपर हृदय की शिथिलता दूर करते हैं। लहसुन व सोंठ वायु का शमन कर हृद्य कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त गंगाजल, नारियल जल, चंदन, गुलाब, केसर, नागरबेल के पत्ते, सेब, सुवर्ण आदि हृदय के लिए विशेष हितकर हैं। गले में सोने की माला (चेन, लॉकेट) व कनिष्ठिका (हाथ की सबसे छोटी उँगली) में सोने की अँगूठी पहनने से हृदय को बल मिलता है। सुवर्ण-सिद्ध जल भी लाभदायी है। यह जल बनाने के लिए पानी में शुद्ध सोने के गहने डाल के उसे उबालकर लगभग आधा करें।

सुबह खुली हवा में पैदल चलने का व्यायाम हृदय को स्वस्थ रखता है।

भारत में विशेषतः पुरुष-वर्ग में हृदय-रोगियों की संख्या सर्वाधिक है। भारतीय संस्कृति की अवहेलना व पाश्चात्यों का अंधानुकरण इसका मुख्य कारण है।

शास्त्रनिर्दिष्ट प्राकृतिक जीवनशैली को अपनाना यह निरामय जीवन की गुरुचाबी है। ❑

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

जहाँ हरियाली होती है, वहाँ वर्षा आती है। जहाँ वर्षा आती है, वहाँ हरियाली होती है। ऐसे ही जहाँ पूज्य बापूजी के सत्संग-कीर्तन-ध्यान-योग-वेदांत की अमृतवर्षा होती है, वहाँ भक्ति, सुख-शांति, समृद्धि रूपी हरियाली होती है और जहाँ यह समृद्धि आ जाती है, वहाँ के सज्जन फिर इस ज्ञानामृत-वर्षा के बिना नहीं रह पाते।

२६ दिसम्बर को **सूरत (गुज.)** में ध्यानयोग शिविर की पूर्णाहुति के बाद शुरू हुआ एकनाथजी, ज्ञानेश्वरजी जैसे महान गुरुभक्तों-महापुरुषों की भूमि महाराष्ट्र में गुरुज्ञान की अमृतवर्षा का प्रदीर्घ सिलसिला। **२६ दिसम्बर** को **शिरपुर (महा.)** में सत्संग हुआ। चिंतनधारा बदल देनेमात्र से कितना कल्याण हो सकता है, इसे समझाते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''तुम किससे बँधे हो ? दुःख से बँधे हो, चिंता से बँधे हो, लोभ से बँधे हो ? धन का चिंतन करने से व्यक्ति लोभ से बँधता है, शत्रु का चिंतन करने से द्वेष से बँधता है लेकिन भगवान का चिंतन करने से भगवान मुक्तात्मा तो तुम भी मुक्तात्मा ! देर क्या है, मेहनत कहाँ है !

नुक्ते की हेर-फेर में खुदा से जुदा हुआ।
नुक्ता अगर ऊपर रख दे तो जुदा से खुदा हुआ॥

शरीर को 'मैं' मानता है तो परमात्मा से अलग हुआ और 'मैं' (आत्मा) को 'मैं' जानकर गोता मारता है तो परमात्मा तेरा आत्मा ही है। कहाँ दूर है, कहाँ दुर्लभ है !''

२७ दिसम्बर से २८ सुबह तक **भुसावल (महा.)** में सत्संग हुआ। भगवान के स्वरूप व सत्-असत् कर्म की व्याख्या को बड़े ही सरल ढंग से समझाते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''भगवान सत्स्वरूप हैं, चेतनस्वरूप हैं, आनंदस्वरूप हैं, ज्ञानस्वरूप हैं। उनकी तरफ ले जानेवाले जो भी कर्म हैं, वे सत्कर्म हैं। भगवत्स्वभाव को जगानेवाले जो भी कर्म हैं, वे पुण्यकर्म हैं। जो असत् व जड़ता की तरफ ले जाते हैं, अज्ञान व दुःख बढ़ाते हैं, वे असत् कर्म हैं।''

२८ दिसम्बर की दोपहर **जलगाँव आश्रम (महा.)** में श्रद्धालुओं को डेढ़ घंटे तक पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग का लाभ मिला। **२८ दिसम्बर** की **शाम** को **जामनेर (महा.)** में भी सत्संग हुआ। यहाँ की जनता को जीवन के महान लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग बताते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''मनुष्य दुःख-सुख में सम रहे और अपने आत्मा-परमात्मा को जाने, ऐसा बुद्धि का योग प्रेमपूर्वक भक्ति करके शांत होने से होता है।''

२९ दिसम्बर का सत्संग **बुलढाणा (महा.)** वासियों के नाम रहा। नवधा भक्ति में किसी भी एक साधन को भलीप्रकार पकड़ लेने से अन्य अपने-आप आ जाते हैं। उसमें से **दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।** पर प्रकाश डालते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''आप जैसा सोचते हैं, सुनते-मानते हैं, ऐसे बन जाते हैं। सामान्य आदमी का सुनते-मानते हैं तो आप सामान्य बन जाते हैं, श्रेष्ठ पुरुषों का सुनते-मानते हैं तो आप श्रेष्ठ पुरुष बन जाते हैं और भगवान का सुनते-मानते हैं तो आप भगवान को पाकर भगवन्मय हो जाते हैं।''

३० दिसम्बर को **जालना (महा.)** की जनता को सम्बोधित करते हुए बापूजी ने मान्यता की महत्ता पर प्रकाश डाला : ''आप कभी अपने को पापी नहीं मानें, बड़ा पुण्यात्मा भी नहीं मानें। पुण्यात्मा मानेंगे तो सूक्ष्म अहंकार होगा, पापी मानेंगे तो विषाद होगा। दुःखी मानेंगे तो दुःख बढ़ जायेगा, बीमार मानेंगे तो बीमारी बढ़ जायेगी। आपकी जैसी मान्यता होती है, ऐसा शरीर पर असर पड़ता है।''

३१ दिसम्बर से **२ जनवरी** तक हुई पूज्यश्री की ज्ञानवर्षा में **मायानगरी मुंबई** के लोग मायापति भगवान के ज्ञान में सराबोर हुए। भगवत्प्रेम की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए पूज्य बापूजी ने कहा :

''अरे, जो भगवान को प्रेम करता है, भगवान के नाते प्रेम से सबका हित चाहता है, वही सच्चा सेठ है। तिजोरी में जो रख-रख के मर जाता है वह लोभी तो न जाने साँप बने कि छिपकली या किस-किस योनि में जाय, इसका कोई छोर नहीं ! वह कोई सेठ होता है क्या ! भगवान के नाते प्रेम से सबकी सेवा करे, सबका मंगल चाहे, करे और सबमें छिपे हुए मंगलमय प्रभु का ज्ञान पा के गोता मारे, वही तो सेठ है !''

२ से ६ जनवरी तक पूज्य बापूजी **निवाई आश्रम (राज.)** में रहे। एकांतवास के दौरान भी स्थानीय लोगों को ज्ञान-प्रसाद एवं जपयज्ञ में आनेवाले गरीब-गुरबों को किलो-किलो खजूर व अन्य प्रसादी बाँटी गयी।

६ जनवरी की शाम जयपुर हवाई अड्डे पर एकत्र भक्तों को आधा घंटा सत्संग देकर पूज्य बापूजी ने मुंबई के लिए प्रस्थान किया। ७ जनवरी की सुबह मुंबई के साधक-भक्तों को दर्शन देकर मुंबई से नांदेड़ के लिए प्रस्थान किया।

नांदेड (महा.) के निवासियों की दो वर्ष से चल रही प्रार्थनाएँ फलीभूत हुईं और **७ से ९ जनवरी** तक सत्संग उनके भाग्य में रहा। पूज्य बापूजी निवास पर न जाकर सीधे व्यासपीठ पर पहुँचे। विनम्रता की मूर्ति, करुणा के सागर पूज्य बापूजी पहुँचते ही बोले : ''माफ करना, किसी कारण से जहाज लेट हो गया, इसलिए देर हो गयी।'' कितने सरल हैं !

आपश्री विनम्रता की प्रतिमूर्ति तो हैं ही, ज्ञान के अगाध सागर भी हैं। सार में सर्व की कुंजी बताते हुए सर्वांगीण उन्नति के समर्थक आपश्री ने कहा : ''आपके जीवन में चार बातें होनी चाहिए। एक तो शरीर स्वस्थ, दूसरा मन प्रसन्न, तीसरा बुद्धि में बुद्धिदाता का ज्ञान व सामर्थ्य और चौथा आपका आत्मा परमात्मा के साथ जुड़ा है, इसका आपको पता होना चाहिए।''

धर्म के प्रथम साधन शरीर को स्वस्थ रखने की एवं मुफ्त में भगवत्प्रीति पाने की सरल युक्ति बताते हुए इन लोकसंत ने कहा : ''रविवार को छोड़कर बाकी के दिनों में सुबह तुलसी के ५-७ पत्ते खाने से पेट की तकलीफें तो ठीक होती ही हैं, भोजन में डालने से भोजन भी प्रसादी बन जाता है। भगवान भी उस भोजन को स्वीकार करते हैं, जिसमें तुलसी के पत्ते डालते हैं।''

९ जनवरी का एक सत्र **आदिलाबाद (आं.प्र.)** वालों के नाम रहा। यहाँ पर हलवा व पुलाव का भंडारा किया गया। हलवे की मधुरता के साथ आत्मज्ञान की मधुर मिठास एवं भगवत्प्रसाद का भी लोगों ने लाभ लिया।

यदि मिष्टान्न खिलाना माँ की दया है तो कड़वी दवा पिलाना तो माँ की कृपा है। करोड़ों-करोड़ों माताओं के हृदय के प्यार को इकट्ठा कर दो तो भी जिनके प्यार से उसकी तुलना नहीं हो सकती, ऐसे 'सद्गुरु माऊली' बापूजी ने अपनी प्यारी संतानें कहीं संकुचित न रह जायें इसलिए कुछ कड़क शब्दों में समझाते हुए कहा : ''जो लोग संसार की चीजें पाकर बोलते हैं, 'मैं बड़ा हूँ, मैं बड़ा हूँ' वे महामूर्ख हैं। चीजों से अपने को बड़ा मानते हैं तो अंतरात्मा का तो अनादर करते हैं ! उन पर भगवान रूठते हैं और उनकी मति मारी जाती है।''

१० जनवरी को एक ही दिन में तीन-तीन जगहों पर हुई सत्संग-अमृत वर्षा ने लाखों दिलों को भगवद्रस से सराबोर कर दिया। सुबह का सत्र **चन्द्रपुर (महा.)** में हुआ। प्रकृति के नियम पर प्रकाश डालते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''जिसको जो चीज मिलती है उसका अगर वह सदुपयोग करता है तो सत्य उसे खूब ऊँचे ले जाता है। अगर दुरुपयोग करता है तो उसके अधिकार, उसका यश और उसकी योग्यता प्राकृतिक नियम हर लेता है।''

१० जनवरी को **दोपहर** में एक सत्र के सत्संग का सौभाग्य **देगलूर (महा.)** की जनता को मिला। वर्षों की प्रार्थना के बाद पहली बार अपने प्यारे पूज्य बापूजी के आगमन की सूचना पाकर आपके दीदार के लिए विशाल जनसागर उमड़ा। देगलूरवासियों ने बापूजी के आगमन के पहले ही पण्डाल को नन्हा कर दिया। जिन महापुरुष को किसीसे कुछ नहीं चाहिए, यहाँ तक कि लोगों द्वारा सम्मान करने के लिए लायी हुई माला भी जो

लानेवालों को पहनवा देते हैं, जिन्होंने अपने आश्रम में लिखवा रखा है कि 'यहाँ चीज-वस्तु, रुपये-पैसे की आवश्यकता नहीं है', जो अपने साधकों द्वारा कर्मयोग के माध्यम से ही आजीविका का अर्जन करवाते हैं और गरीबों में अन्न-वस्त्रादि वितरण करते-करवाते हैं, ऐसे परम निःस्पृह संत पूज्य बापूजी के श्रीमुख से ही ऐसी दान-धर्म की तटस्थ बात शोभा पाती है : ''धर्म की सेवा करने से तो सात पीढ़ियाँ सुखी हो जाती हैं। जो धर्म की सेवा नहीं करते, खुद खाओ-खाओ में लगे रहते हैं, वे फिर फैटी (मोटे) हो जाते हैं। उनके लिए चलना-फिरना मुसीबत हो जाता है। फिर उनको दवाई में खर्चा करना पड़ता है। जो मोटे-मोटे लोग हैं, दान-पुण्य किया करो, नहीं तो फिर अस्पतालवाले ऑपरेशन करेंगे, लाखों रुपया ले लेंगे।''

१० जनवरी (शाम) व ११ (सुबह) का एक-एक सत्र **निजामाबाद (आं.प्र.)** की जनता की झोली में रहा। पूज्य बापूजी ने दिव्य जीवन की युक्ति बताते हुए कहा : ''तुच्छ जीवन शरीर को 'मैं' मानता है और संसार को सच्चा मानता है, दिव्य जीवन आत्मा को 'मैं' मानता है, परमात्मा को सच्चा मानता है। तुच्छ जीवन दूसरे को दुःख देकर मजा लेगा और दिव्य जीवन स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरे का दुःख मिटायेगा।

अपने दुःख में रोनेवाले ! मुस्कराना सीख ले।...
आप खाने में मजा नहीं,
जो औरों को खिलाने में है।
जिंदगी है चार दिन की,
तू किसीके काम आना सीख ले।''

११ जनवरी का एक सत्र **करीमनगर (आं.प्र.)** की झोली में रहा। पूज्यश्री उवाच : ''अपने जीवन में एक आलम्बन होना चाहिए, एक आश्रय होना चाहिए। झूठ-कपट का आश्रय लेगा, चोरी-बेईमानी का आश्रय लेगा तो नीरस होगा और भूत बनेगा, गधा बनेगा, कुत्ता बनेगा। भगवान के नाम का आश्रय लेगा तो दुःख तो मिटेगा, भगवान की भी प्राप्ति हो जायेगी। दोनों हाथों में लड्डू !''

११ (शाम) व १२ जनवरी का सत्संग **हैदराबाद (आं.प्र.)** की जनता को प्राप्त हुआ। अनेक जनप्रतिनिधियों ने सत्संग में उपस्थित होकर अपने को धनभागी पाया।

प्रदेश के वस्त्र व लघु उद्योग मंत्री श्री शंकरराव ने कहा : **''पूज्य बापूजी ! जो निर्धन होने के कारण, सुविधा के अभाव में अथवा अन्य किसी असमर्थता के कारण आपके सत्संग में नहीं आ पाये, वे यदि कुछ क्षणों के लिए भी मन में ही ईश्वर के अवतारस्वरूप आपका दर्शन-स्मरण कर लें तो समझो उनका जन्म सफल हो गया। आज सशरीर ईश्वर हमारे सामने है।**

मैं बापूजी से आशीर्वाद चाहता हूँ हमारी मैडम सोनिया गांधीजी के लिए, राहुल गांधीजी और हमारे प्रधानमंत्री मनमोहनसिंहजी के लिए। वाजपेयीजी, मुख्यमंत्री किरण कुमार रेड्डीजी, राष्ट्रपति प्रतिभा पाटीलजी तथा समस्त देश और विश्व की जनता के लिए भी मैं आपसे आशीर्वाद चाहता हूँ। हे भगवान ! हमारे देश को शांति व समृद्धि प्रदान कीजिये। धर्म भले सबका अलग है लेकिन ये सब लोग आप ही के बच्चे हैं।''

१५ से १९ जनवरी तक आयोजित 'उत्तरायण ध्यान-योग साधना शिविर' के लिए **१३ जनवरी** को पूज्य बापूजी का **अहमदाबाद** में आगमन हुआ।

प्रेमाभक्ति का शास्त्रों में एक लक्षण कहा गया है : **दिने दिने नवं नवं प्रतिक्षणं वर्द्धमानम्।**

भक्तों को आनंद-माधुर्य-ज्ञानामृत का पान करानेवाले प्यारे जोगी बापूजी की इस बार कुछ निराली ही लीला देखने को मिली। दर्शन हेतु भक्तों को लम्बी कतारों में न लगना पड़े, इसलिए जोगी ने भरे पण्डाल में सेवकों द्वारा भक्तिभाव से बनायी गयी रेलगाड़ी में सवारी की। इससे लाखों-लाखों श्रद्धालु पूज्यश्री को अनेक बार समीप से देख भी सके और सुन भी सके। गूँगा कैसे बताये गुड़ का स्वाद ! उस अनोखे अनुभव का वर्णन करने का

सामर्थ्य लेखनी में कहाँ ! उस आनंदोत्सव की मधुरता का आस्वादन एक ओर जहाँ प्रत्यक्षदर्शी जनसिंधु कर रहा था, वहीं दूसरी ओर ए-टू-जेड, जी-जागरण, सत्संग चैनल, हाथ-वे केबल, डेन केबल, जे.पी.आर. केबल, होम केबल आदि तथा इंटरनेट टी.वी. द्वारा सजीव-प्रसारण के माध्यम से विश्वमानव भी कर रहा था।

विशाल पण्डाल के बीच पटरियाँ बिछी हों और भक्तों के बीच रेलगाड़ी के चालक भी आप, दर्शन देनेवाले भी आप और यात्री भी आप ! टीटी भी आप, गार्ड भी आप ! रेलगाड़ी भी चला रहे हैं और सत्संग भी कर रहे हैं, दर्शन भी दे रहे हैं। ऐसी रेलगाड़ी आपने नहीं देखी होगी, पक्की बात है ! लाखों की भीड़ के बीच कैसे रेलगाड़ी चलती है... सीटी मारते हुए कैसे सैर होती है... आप प्रत्यक्षदर्शी होते तो !... खैर, सी.डी. या डी.वी.डी. द्वारा देख सकते हैं। दीदारबाजी, हरि राजी !

पण्डाल में दर्शन हेतु सेवकों ने रेल की व्यवस्था की तो पथ में दर्शन हेतु बनाया 'ब्रह्मरथ' ! निष्काम सेवा करनेवालों को भगवान कैसी-कैसी प्रेरणा देते हैं, इसका यह प्रत्यक्ष उदाहरण है।

इस शिविर में 'बाल संस्कार केन्द्र' का 'ज्योत-से-ज्योत जगाओ' राष्ट्रीय सम्मेलन एवं 'ऋषि प्रसाद' का वार्षिक सम्मेलन भी सम्पन्न हुआ।

मकर संक्रांति के पुण्य पर्व पर देश-विदेश से पधारे साधकों हेतु पापनाशक तिलमिश्रित उबटन तथा तिलमिश्रित भोजन की व्यवस्था की गयी थी। हड्डियों तक के पाप-ताप हरनेवाला पंचगव्य एवं पुष्टिकारक आँवला रस भी पिलाया गया।

वेदांत की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''सभीका मूल रसस्वरूप है, इसलिए रस लिये बिना कोई रहता नहीं। कोई नश्वर रस के पीछे पड़कर नाश को प्राप्त होते हैं, कोई दैविक रस के पीछे पड़ के देवत्व को पाते हैं। कोई आसुरी रस के पीछे पड़कर असुर-स्वभाव को, असुर-योनियों को पाते हैं। कोई योगरस को लेकर समाधि को पाते हैं। कोई भगवद्भाव का रस लेकर भगवद्धाम में जाते हैं और कोई जैसा रस का मूल स्वरूप है, उसको जानकर यहीं-के-यहीं ब्रह्मरस का आस्वादन करके ब्रह्ममय हो जाते हैं। जैसे अन्य जीव-जंतुओं का कोलाहल जंगल में तब तक होता है जब तक शेरे-बबर की गर्जना नहीं होती, ऐसे ही जीवन में वेदांत की समझ आयी तो आपके सारे भय, शोक, आकांक्षाएँ सब भाग जाते हैं।''

१९ जनवरी की **सुबह** उत्तरायण शिविर की पूर्णाहुति पूनम-दर्शन से करके पूज्य बापूजी उत्तर भारत के पूनम-दर्शन व्रतधारियों को तृप्त करने **दिल्ली** पहुँचे। आध्यात्मिक शक्ति की महिमा को प्रतिपादित करते हुए आपश्री ने कहा : ''आतिशबाजी का अनार दूर से चमकता है किंतु नजदीक जाओ तो अंगारों से जलाता है। असली अनार चमक-दमक न भी रखे लेकिन नजदीक जाओ तो प्यास बुझाता है, शरीर के दोष मिटाता है, खून बनाता है, तृप्ति-संतुष्टि देता है, वह जीवनीशक्ति से भरा है। जिसके जीवन में आध्यात्मिक शक्ति है, उसका जीवन असली अनार जैसा है और जिसके जीवन में आध्यात्मिक खजाना, नित्य-नियम नहीं है, उसका जीवन आतिशबाजी के अनार जैसा भौतिक चमक-दमकवाला है।''

२३ जनवरी को **बगरू (राज.)** में सत्संग हुआ। सत्संग की महत्ता बताते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''वैदिक संस्कृति कहती है कि

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥

'दुर्जन सज्जन बनें, सज्जनों को शांति मिले और शांतात्मा अपने मुक्त स्वरूप का अनुभव करें तथा मुक्त पुरुष औरों को मुक्ति के मार्ग पर ले जायें।'

रोगों से मुक्त, दुःखों से मुक्त, चिंताओं से मुक्त, अभिमान से और पापों से मुक्त ! यह केवल सत्संग से ही सम्भव है। इसलिए संत तुलसीदासजी ने कहा है : **एक घड़ी आधी घड़ी...**

रामायण में आता है :

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥

करोड़ों अपराध की वृत्तियों और पापों को सत्संग के द्वारा मिटाया जाता है।'' ❒

'स्वाध्याय'

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों के उत्तर खोजने हेतु 'ऋषि प्रसाद' के इस अंक को ध्यान से पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

१. भवसागर को पार करने के लिए गुरु के .... जैसी और कोई सुरक्षित नौका नहीं है।

२. दृढ़ भक्ति के लिए जीवन में...... बहुत जरूरी है।

३. केवल ज्ञान का फल, परमात्म-साक्षात्कार का फल ही........... है।

४. .... तब मिलता है जब देह से एक होना भूलते हैं और परमात्मा से एक होते हैं।

५. जो नकारात्मक सोचता है, घृणात्मक सोचता है उसको...... ही मिलती है और....... जाता है।

६. प्रभु का चिंतन आपको..... बना देगा।

७. बाहर के जगत के व्यवहार को अपनी वासनाओं की डोर से बाँध रखने का जो आग्रह है, उससे ही...... होता है।

८. ....के विचार आदमी का जितना सत्यानाश करते हैं, उतना तो मौत भी नहीं करती।

९. .... करते समय यह भावना नहीं होनी चाहिए कि लोग मेरी प्रशंसा करें, वाहवाही करें।

१०. .... में ही भगवान का अवतार और अद्वैत ज्ञान है।

११. जहाँ पूज्य बापूजी के सत्संग-कीर्तन-ध्यान-योग-वेदांत की अमृतवर्षा होती है, वहाँ .... रूपी हरियाली होती है। ☐

पूज्य बापूजी का आगामी सत्संग-कार्यक्रम

✻ नवी मुंबई (सीवुड) में सत्संग ✻

18 (शाम 4 बजे) से 20 फरवरी

गणेश मैदान, केन्द्रीय विहार के पीछे, स्टेशन के पास, सीवुड (वेस्ट)।

सम्पर्क : 9867679298, 9930884555.

लाखों विद्यार्थियों तक पहुँची ज्ञान-प्रतियोगिता

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से शुरू हुई 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता' तीसरे वर्ष भी विभिन्न राज्यों में सम्पन्न हुई। अपनी बुद्धि की कुशाग्रता परखने का लक्ष्य-सम्पादन करते हुए विद्यार्थियों को 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश, बाल संस्कार' इन सत्साहित्यों का गहराई से अध्ययन-मनन करने का सुअवसर मिला।

वर्ष २००८ में ४,५५,००० और वर्ष २०१० में १५,५०,४१९ विद्यार्थी इस प्रतियोगिता में सम्मिलित हुए। सर्वाधिक विद्यार्थियों का पंजीकरण करनेवालों में मेट्रो श्रेणी में प्रथम स्थान पाया मुंबई ने; अन्य श्रेणी में पुणे (महा.) ने प्रथम, नासिक (महा.) ने द्वितीय तथा बाड़मेर (राज.) ने तृतीय स्थान पाया। प्रतियोगिता की राष्ट्रीय परीक्षा दक्षिणी क्षेत्र के लिए सूरत (गुज.) व उत्तरी क्षेत्र के लिए दिल्ली में सम्पन्न हुई। देश भर के हजारों विद्यालयों-महाविद्यालयों, श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधकों को इस दैवी पुरुषार्थ की खूब-खूब बधाइयाँ !

भारतीय संस्कृति के आधारभूत तथ्य

पंच कोष : अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय।

पंच महाभूत : पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश।

पंच प्राण : प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।

पंच क्लेश : अविद्या, अस्मिता (अभिमान), राग, द्वेष और अभिनिवेश (मृत्युभय)।

षड् दर्शन : सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा (वेदांत)।

षड् ऋतुएँ : वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत।

षट्सम्पत्ति : शम, दम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधान। (क्रमशः)
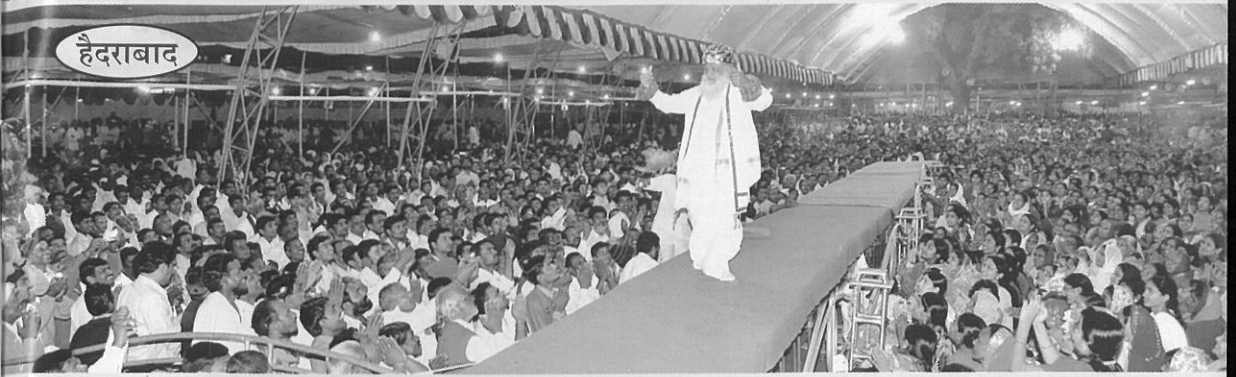
सत्संग में तेरे जो भी आता, खाली झोली भर ले जाता...
मुंबई
हैदराबाद
दिल्ली
अहमदाबाद
आप ही चालक, आप ही यात्री, आप ही गार्ड, आप ही टीटी।
सत्संग-दर्शन आप ही देते, दिग्विजय की बजे है सीटी॥
कैसा है गुरुवर का खेल। ये रेल छुड़ाये भव-जेल॥